तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका

जून-2020 रु.5/-

उभयदेवेरियों के साथ
श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामीजी
श्रीनिवासमंगापुरम्

तिरुमल श्री बालाजी के मंदिर में एकांत में संपन्न ज्येष्ठाभिषेक के दृश्य

अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः।
भीष्ममेवाभिरक्षन्तु भवन्तः सर्व एव हि॥

(- श्रीमद्भगवद्गीता १-११)

इसलिये सब मोर्चों पर अपनी-अपनी जगह स्थित रहते हुए आप लोग सभी निःसंदेह भीष्मपितामह की सब ओर से रक्षा करें।

योऽधीते विष्णुपर्वाहे गीतां श्री हरिवासरे।
स्वपङ्जाग्रच्चलं स्तिष्ठ ञ्छत्रुभिर्नसहीयते॥

(- गीता मकरंद, गीता की महिमा)

विष्णु पर्व के दिन या एकादशी आदि दिनों में जो आदमी गीता का अध्ययन करेगा, वह सोते, जागते, चलते, बैठते शत्रुओं के द्वारा (काम क्रोध आदि) कभी भी अपमानित नहीं होगा।

स्वामी के आगमन की अनुभूति
अपने ही घर में पाइए

सप्तगिरि मासिक
पत्रिका के लिए चंदा भरकर

श्रीहरि का अक्षरप्रसाद
हर महीने स्वीकार कीजिए

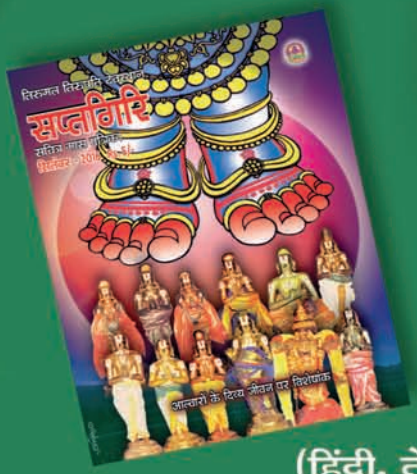

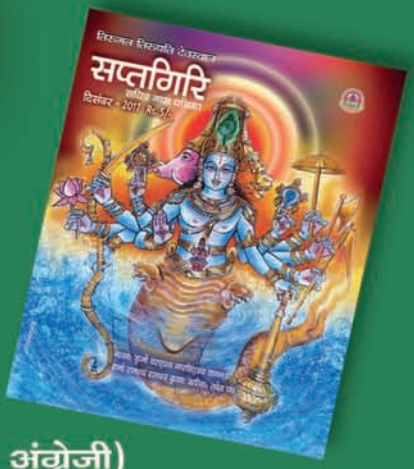

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका

(हिंदी, तेलुगु, कन्नड, तमिल, संस्कृत, अंग्रेजी)

चंदा विवरण

वार्षिक चंदा - रु.६०/-
आजीवन चंदा - रु.५००/-
विदेशों में भेजने के लिए
वार्षिक चंदा - रु.८५०/-

संस्कृत सप्तगिरि की मासिक पत्रिका
के लिए आजीवन चंदा भरने की सुविधा नहीं है।

विवरण के लिए
प्रधान संपादक

सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस काम्पाउण्ड,
के.टी.रोड, तिरुपति - ५१७ ५०१.
दूरभाष : ०८७७-२२६४३६३,
२२६४५४३.

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।

वर्ष-५१ जून-२०२० अंक-०१

विषयसूची

श्रीनम्माळ्वार (श्रीशठकोप स्वामीजी)	श्री गोकुल दरक	07
तिरुवाय्मोळि पिल्लै	श्रीमती श्यामला शर्मा	10
श्रीवेदव्यास भट्टर	श्री कमल. अजोय सरफ	14
श्रीवररंगाचार्य स्वामीजी (तिरुवरंग पेरुमाळ अरैयर)	श्री दिनेश. टोडि	17
वादिकेसरी अळगिय मणवाल जीयर	श्री राजेश. खैतन्	20
श्रीकृष्णपाद स्वामीजी (वडुक्कु तिरुवीधि पिल्लै)	श्री गोविंदलाल बी. मालपाणी	22
शरणागति मीमांसा	श्री कमलकिशोर हि. तापडिया	24
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	26
पेरियाळ्वार (श्रीविष्णुचित्त स्वामीजी)	श्री संजय टिब्रेवाल	31
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	36
अन्नमय्या के जीवन का इतिहास	श्रीमती पी.सुजाता	38
भागवत कथा सागर भगवान समदर्शी हैं	श्री अमोघ गौराँग दास	40
श्री मधुरकवि स्वामीजी	श्रीमती सरोज. भट्टड	42
आसुरी गुण ही बंधन का कारण है	श्री अमोघ गौराँग दास	45
हृषिकेश - एक प्रमुख देवभूमि	श्रीमती टी.त्रिवेणी	47
हरिदास वाङ्मय में श्रीवेंकटाचलाधीश	डॉ.एम.आर.राजेश्वरी	50
आइये, संस्कृत सीखेंगे...!!	डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	52

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri_helpdesk@tirumala.org

गौरव संपादक
श्री अनिलकुमार सिंघाल, आई.ए.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
आचार्य के.राजगोपालन्

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
सहकार्यनिर्वहणाधिकारी,
(प्रचुरण व मुद्रणालय),
ति.ति.दे. मुद्रणालय, तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

जीवन चंदा .. रु.500-00
वार्षिक चंदा .. रु.60-00
एक प्रति .. रु.05-00
विदेशी वार्षिक चंदा .. रु.850-00

अन्य विवरण के लिए:
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

मुखचित्र - उभयदेवेरियों के साथ श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामीजी, श्रीनिवासमंगापुरम्।
चौथा कवर पृष्ठ - तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामी का पुष्पयाग महोत्सव।

सूचना

मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

- प्रधान संपादक

संपादकीय

स्वास्थ्य ही धन है

उद्धरेदात्मनात्मानम् आत्मानमवसादयेत्।
आत्मैवह्यात्मनो बन्धुः आत्मैवरिपुरात्मनः।।

''तुम्हें अपनी रक्षा आप करनी होती है, अपना हितैषी तुम स्वयं ही बनोगे, तो न्यून स्तर में गिरने से बच पाओगे। तुम्हारी भलाई चाहनेवाला तथा हानि पहुँचाने वाला मित्र व शत्रु तुम्हारे अंदर ही वास करता है। इसीलिए अच्छे मार्ग पर चलो तथा जीवनयात्रा को सफल बना लो।'' उपर्युक्त पंक्तियाँ निरंतर स्मरणीय हैं, क्योंकि ज्ञानोक्तियाँ कभी फीकी नहीं पड़तीं।

हमारे भारतवासी सदियों से 'प्रकृति' को देवता मानकर उसकी निर्विराम पूजा करते आ रहे हैं। लेकिन पश्चिमी देशवासियों ने इसे परंपरावाद माना, परंतु 'कोरोना' के शिकार होने के बाद उन्हें आज भारतीय सनातन परंपराएँ शरण लेने के हेतु बन गयीं। प्राचीन समय से ही दोनों हाथों को जोडकर 'नमस्कार' मुद्रा में अभिवादन करना भारतीय सदाचार तथा भक्ति व गौरव का संकेत रहा है। आज उसी का अनुसरण पूरा विश्व श्रेयस्कर मान रहा है। बाहर कहीं घूम आने के बाद, घर लौटते ही नहा-धोकर, धुले कपडों को पहनने का संस्कार हमारे पूर्वजों ने हमें सिखाया। यह वास्तव में अपने परिवार को संक्रामक रोगों के शिकार बनने से बचने का कारण था। अपने घर आये अतिथियों को पानी देकर घर के बाहर हाथ-मुँह धोकर घर में आने देना एक रिवाज भी बन गई। इसके पीछे का कारण सोचने योग्य है- बाहर घूमने के कारण सूक्ष्म से सूक्ष्तम प्राणी जो हाथ-पैरों में लगे होते हैं, उन्हें धोकर दूर कर लेना ही है। भारतवासी, भोजन करने से पहले तथा बाद में हाथ-पैर धोने की आदत रखते हैं।

भारत में भोजन करने के रीति-रिवाज भी एक विशेषता रखती है। थालियों में खाना खाने की बजाय, केले के पत्तों में खाना पसंद करते हैं। यह वास्तव में स्वास्थ्य के लिए अच्छा भी है। विज्ञान के शोध ने यह भी स्थापित किया कि ताम्बे व चाँदी के गिलासों में पानी पीना उत्तम है क्योंकि उनमें सूक्ष्मजीव को नष्ट करने की शक्ति होती है। मंदिरों में चाँदी के बर्तनों में पानी भरकर उसमें तुलसी के पत्ते, लौंग तथा इलायची व कपूर के चूर्ण को मिलाकर चरणामृत कहकर भक्तों को दिया जाता है। इसे पीने के कारण रोग दूर होते हैं तथा स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है। तीर्थ या चरणामृत देते समय, अर्चकस्वामी यह मंत्र कहते हुए देते हैं - 'अकालमृत्युहरणं, सर्वव्याधिनिवारणम्।'

भारतवासियों के आचार-व्यवहार अनुसरणीय हैं, इनके आचरण में कभी लज्जित होने की आवश्यकता नहीं है। इनके अनाचरण के कारण ही आज 'कोरोना' जैसा प्राकृतिक प्रकोप पूरे विश्व में विलयतांडव कर रहा है। हमारे संप्रदाय, आचार-विचार पुराने हैं, अनुसरणीय हैं, विस्मरणीय कथापि नहीं हैं। उनके आचरण में हमारा श्रेय है, वे स्वयंरक्षा के उपकरण हैं।

'कोरोना' नामक उपद्रव जो पूरे विश्व में फैला है, उसके निवारण के नेपथ्य में तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुमल में जप-यज्ञ आदि का आयोजन कर रही है। 'योगवाशिष्ठम्' में उक्त 'विषूचिका' जिसे आज हम 'कोरोना' बुला रहे हैं, उसे इस विश्व से मिटाने के लिए उद्यम किये जा रहे हैं। उसके लिए 'धन्वंतरी महामंत्र' का पारायण, रामायणानंतर्गत 'सुंदरकाण्ड' का पठन-पाठन ति.ति.दे. करवा रही है। यह आयोजन अनंतकोटि भक्तों के कुशल-क्षेम व बहत्तर स्वास्थ्य प्राप्ति के लिए किया जा रहा है। स्वास्थ्य अगर अच्छा हो, तो कहा जाता है कि हम जैसा धनवान और कोई रहता ही नहीं।

भारत सरकार ने भी 'कोरोना' से बचाने के लिए कई कदम उठाये। लोगों को बार-बार हाथों को साफ करने के लिए, मुँह पर रूमाल या मास्क बाँधने के लिए, आदमी तथा आदमी के बीच भौतिक रूप से दूरी रखने केलिए सूचनाएँ देकर, सरकार अपनी ओर से बहुजन हित का दायित्व उठा रही है।

श्रीनम्माळ्वार

(श्रीशठकोपस्वामीजी)

- श्री गोकुल दत्तक
मोबाइल - ९४४८०१४९८५

तिरुनक्षत्र - वृषभ मास, विशाखा नक्षत्र

अवतार स्थल - आळ्वार तिरुनगरि

आचार्य - मुदलियार - श्रीविष्वक्सेन

शिष्य - मधुरकवि आळ्वार

श्री नम्माळ्वार को मारन, शठगोपन, परान्कुश, वकूलाभरण, वकुलाभिरामन, मघिल्मारान, शटजित, कुरुगूर नंबी इत्यादि नामों से भी पुकारा जाता है।

कलियुग के प्रारंभ में नम्माळ्वार, कारि और उदयनन्गै के पुत्र के रूप में आळ्वार तिरुनगरि (तिरुक्कुरुहूर) में अवतरित हुए। श्रीभगवद्गीता में श्रीकृष्ण निश्चयपूर्वक घोषित करते हैं कि ''वासुदेव सर्वं इति स महात्मा सुदुर्लभः'', मतलब, ऐसे महापुरुष (यानी महात्मा) जो जानते हैं कि भगवान वासुदेव सर्वत्र हैं, वे विरले ही होते हैं। नम्माळ्वार के श्रीग्रंथों से यह निश्चित कर सकते हैं कि वे उन महापुरुषों में से एक हैं। वे एम्पेरुमान के कितने प्रिय हैं यह जानकारी उनके दिव्यप्रबंधों से जान सकते हैं। श्री नम्माल्वार इस भौतिक जगत में एक इमली के पेड (तिरुपुलिआळ्वार) के नीचे अपने बत्तीस वर्ष का जीवन भगवद् भक्ति (भगवान के ध्यान) में बिताया। इनके द्वारा लिखे गये ग्रंथों में तिरुवाय्मोळि (श्रीसहस्रगीति) सबसे प्रसिद्ध है। इसे सामवेद के समान माना जाता है। हमारे पूर्वाचार्यों के व्याकरण में यह बताया गया हैं की कुरुगूर (सामान्यतः सहस्रगीति के पाशुरों में, हर दशक के अंतिम पाशुर में श्री नम्माळ्वार का नाम होता है जिसके पहले कुरुगूर नाम लगा होता हैं जो आळ्वार का अवतार स्थल है) सुनते ही हमें दक्षिण दिशा की ओर (जहाँ आळ्वार श्री नम्माळ्वार का प्रपन्न जन तिरुनगरि/कुरुगूर है) अंजलि करना होता है। कूटस्थर माना जाता है यानी प्रपन्नों की गोष्ठि में आपका सबसे प्रथम स्थान हैं। श्रीआलवंदार इन्हें वैष्णव कुलपति करके सम्बोधित करते हैं। श्रीआलवंदार अपने स्तोत्र रत्न के पाँचवे श्लोक में घोषित करते हैं कि वे श्रीवकुलाभिरामन (श्री नम्माळ्वार) के चरण कमलों में प्रणाम करते हैं जो उनके और उनके (वर्तमान / भविष्य) अनुचरों के लिये सब कुछ / सर्वस्व (पिता, माता, पुत्र, संपत्ति इत्यादि) हैं।

श्रीरामानुज स्वामीजी (जो स्वयं शेषजी के अवतार हैं) को ''मारन अडि पाणिंदु उय्न्दवन'' कहकर संबोधित किया जाता है, जिसका अर्थ है वे जो श्री नम्माळ्वार के पादकमलों का आश्रय लेकर समृद्ध हुए।

नम्पिल्लै, पूर्व आचार्यों के ग्रंथों, अपने ईडू और तिरुविरुत्तम व्याख्यान के आधार पर यह स्थापित करते हैं कि नम्माळ्वार को स्वयं भगवान (एम्पेरुमान) ने अपने वैभव को गाने के लिए और बद्ध जीवात्माओं को श्रीवैष्णव संप्रदाय में लाने के लिए लीला विभूति से चुना है। यह विषय वे स्वयं नम्माळ्वार के शब्दों से लेकर प्रामाणित

करते हैं। एम्पेरुमान अपनी इच्छा से इन्हें परिपूर्ण ज्ञान का अनुग्रह करते हैं जिससे वे भूत, वर्तमान और भविष्य काल अपनी आखों के सामने देख सकते हैं। वे अपने दिव्यप्रबंध में कई जगह बताते हैं कि स्मरानातीत काल से संसार के दुःख भुगत रहे हैं और यह दुःख इनसे और सहन नहीं होता। वे यह भी कहते हैं कि संसार में जीना एक तपते हुए गरम जमीन पर बिना पाद रक्षक के खड़े होने के बराबर है। तिरुवाय्मोळि के प्रथम पाशुर में ही नम्माळवार बताते हैं कि एम्पेरुमान के दिव्य अनुग्रह से ही इनको विशेष ज्ञान प्राप्त हुआ है। यह सब सूचित करते हैं कि एकाएक समय में नम्माळवार भी एक बद्ध जीवात्मा थे। यही तर्क अन्य आळवार के विषय में उपयोग कर सकते हैं क्योंकि :

१) श्री नम्माळवार को अवयवी (सम्पूर्ण) और अन्य आळवारों (आंडाल के अलावा) को अवयव (भाग) माना जाता है।

२) अन्य आळवार भी इन्हीं की तरह अपने सांसारिक दुःख और एम्पेरुमान के विशेष अनुग्रह के बारे में बताते हैं।

३) नम्माळवार ने चार प्रबंधों की रचना की है। वे इस प्रकार हैं -

अ) तिरुविरुत्तम (ऋग्वेद समान)

आ) तिरुवासिरियम (यजुर्वेद समान)

इ) पेरिय तिरुवंदादी (अथर्वणवेद समान)

ई) तिरुवाय्मोळि (सामवेद समान)

इनके चार दिव्यप्रबंध चार वेदों के समान माने जाते हैं। इसी के कारण इन्हें ''वेदम तमिल सेय्द मारन'' नाम से भी संबोधित किया जाता है। इसका अर्थ है कि संस्कृत वेदों का सारार्थ तमिल प्रबंधों में अनुग्रह करने वाले मारन। अन्य आळवारों के प्रबंध वेदों के अंग (जैसे शिक्षा, व्याकरण इत्यादि) माने जाते है और तिरुवाय्मोळि को ४००० दिव्य पाशुरों का सार संग्रह माना जाता है। अपने पूर्व आचार्यों के सभी ग्रंथ (व्याख्यान और रहस्य ग्रन्थ) इसी पर आधारित हैं। तिरुवाय्मोळि के पांच व्याख्यान हैं और इसका पूर्ण विशेष (विस्तृत टिप्पणी) अरुंपदम में किया गया है, इसी से हमें इसकी महत्ता का पता चलता है।

अपने पूर्व आचार्य स्थापित करते हैं कि नम्माळवार एक परिपूर्ण गुणों के भंडार हैं जिनमें श्रीदेवी, भूदेवी, नीला देवी, गोपिकाएँ, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, दशरथ, कौसल्या, प्रह्लाद, विभीषण, हनुमान, अर्जुन इत्यादियों के विशिष्ट गुण समाये हुए हैं, लेकिन इन सबमें नम्माळवार के केवल थोड़े ही गुणों की परिपूर्ति है।

तिरुवाय्मोळि-पलरड़ियार मुन्बरुळिय (७.१०.५) में नंपिळ्ळै अति सुंदरता से नम्माळवार की मन की बात बताते हैं। नम्माळवार बताते हैं कि एम्पेरुमान ने बजाय महा ऋषि जैसे श्रीवेदव्यास, श्रीवाल्मीकि, श्रीपराशर और तमिल विद्वान मुदल आळवार के, उन्हें तिरुवाय्मोळि गाने के लिए अनुग्रहित किया है।

इस वैभव को ध्यान में रखते हुए, आईये उनके विशेष चरित्र का ज्ञान प्राप्त करें -

नम्माळवार जिन्हें अवयवी यानि सम्पूर्ण और शेषाळवारों को अवयव माना गया है वह (नम्माळवार) तिरुक्कुहूर यानि आळवार तिरुनगरी जो ताम्रपर्णि के तट पर स्थित है, वहाँ प्रकट हुए। कहते हैं कि ताम्रपर्णि, गंगा, यमुना, सरस्वती इत्यादि नदियों से भी श्रेष्ठ है क्योंकि वहाँ उस नदी के तट पर नम्माळवार प्रकट हुए। वे (नम्माळवार) प्रपन्नकुल वंश के (जो कई पीढियों से है) सदस्य, कारि, नामक व्यक्ति के पुत्र के रूप में प्रकट होते हैं। तिरुमळिशै आळवार का कहना है कि ''जो इस प्रपन्नकुल में जन्म लेते हैं, वे सब भगवान श्रीमन्नारायण को ही पूजते हैं और किसी अन्य देवता का आश्रय कदाचित नहीं लेते है''- ''मरन्तुम् पुरम् तोळा मान्तर'' (यानी अगर भगवान

श्रीमन्नारायण को कभी भी भूल जाए, अन्य देवता का शरण कदाचित नहीं लेंगे)। एक तिरुवळुथि वळ नादर थे। उनकी वंशावली में उनके सुपुत्र अरंतान्गियार, उनके सुपुत्र चक्रपानियार, उनके सुपुत्र अच्युतर, उनके सुपुत्र सेंतमरै कण्णन, उनके सुपुत्र पोर्कारियार, उनके सुपुत्र कारियर और उनके सुपुत्र नम्माळवार हुए।

पोर्कारियार अपने सुपुत्र कारी से गृहस्थ आश्रम स्वीकार कराने का निर्णय करते हैं और विलक्षण श्रीवैष्णव वधू की तलाश करना आरंभ करते हैं जिससे पूरी दुनिया को सुधार कर उत्थान करने वाले श्रीवैष्णव का जन्म हो। पोर्कारियार तिरुवंपरिसारम पहुँचते हैं और उनकी भेंट तिरुवाळमार्भर से होती है। जो स्वयं अपने सुपुत्री उदयनंगै के लिए एक श्रीवैष्णव वर की खोज में थे। पोर्कोरियार तिरुवाळमार्भर से यह विनती करते हैं कि उनकी बेटी का विवाह उनके बेटे के साथ हो अर्थात् उडयनंगै और कारियर का विवाह हो।

उनकी विनती स्वीकार कर तिरुवाळमार्भर, कारी और उदयनंगै का बहुत ही भव्य विवाह महोत्सव रचाते हैं। कारियर और उदयनंगै तिरुवंपरिसारम के एम्पेरुमान तिरुवाळमार्भर का दर्शन पाकर तिरुकुरुगूर लौटते हैं। तिरुकुरुगूर में एक उत्सव का वातावरण बना हुआ था। अयोध्या को जब श्रीराम और सीता तिरुकल्याण के अनंतर मिथिला से लौटते हैं तब अयोध्या वासियों ने अत्यंत भक्ति और आनंद से उनका स्वागत किया। ठीक इसी प्रकार तिरुकुरुगूर के वासियों ने भी प्रेम और आनंद के साथ कारियर और उदयनंगै का स्वागत किया।

कुछ समय के बाद कारियर और उदयनंगै तिरुवंपरिसारम में एम्पेरुमान का दर्शन करके वापसी में तिरुकुरुन्गुड़ी के नंबी एम्पेरुमान का दर्शन पाकर उनसे एक सुपुत्र की प्रार्थना करते हैं। नंबी एम्पेरुमान उनकी प्रार्थना स्वीकार करते हैं और उन्हें वचन देते हैं कि वे स्वयं उनके सुपुत्र बनकर आयेंगे। यह सुनकर खुशी से वे तिरुकुरुगूर लौटते हैं। थोड़े दिनों के पश्चात् उदयनंगै गर्भ धारण करती है। कलियुग के तैंतालीस(४३) दिन बाद, नम्माळवार जो स्वयं ''तिरुमालाल अरुला पट्ट शठगोपन'' (एम्पेरुमान के विशेष अनुग्रह से अवतरित शठगोपन) एम्पेरुमान की आज्ञा से, विष्वक्सेनजी के अंश से, बहु धान्य वर्ष, बसंत ऋतु, वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, पौर्णमि तिथि, श्री विशाखा नक्षत्र में प्रकट होते हैं। जिस प्रकार अळगिय मानवाळ पेरुमाळ नायनार अपने आचार्य हृदय में बताते हैं, उसी प्रकार इधर कहा जाता हैं कि ''आदित्य राम दिवाकर अच्युत बनुक्काल्लुक्कू निङ्गात उल्लिरुल नींगी शोषीयाद पिरवीकडल शोषिततु विकसियाद पोदिल कमलं मलारुम्पडी वकुलभुशकण भास्कर उदयं उन्डा इत्तु उदयनंगैइर पूर्व सन्ध्ययिले'' - जिसका अर्थ है संसारियों का जो अज्ञान और अन्धकार, सूर्य (आदित्य), श्रीराम (राम दिवाकर-प्रज्वलित सूर्य के रूप में इनकी महिमा बताई गयी हैं), श्रीकृष्ण (अच्युत भानु-प्रकाशित सूर्य करके संबोधन करते हैं) प्रकट होने पर दूर नहीं हुआ, वह अज्ञान नम्माळवार के प्रकट होने से मिट गया और ज्ञान विकसित हुआ, ऐसे नम्माळवार उदयनंगै को पैदा हुआ।

आदिशेषजी नम्माळवार की रक्षा करने के लिए स्वयं इमली के पेड़ के रूप में प्रकट हुए (यह जानकार कि नम्माळवार तिरुकुरुगूर आदिनाथ एम्पेरुमान के मंदिर को अपना आश्रय बनायेंगे)

नम्माळ्वार की तनियन :

माता पिता युवतय स्थनया विभुथिः
सर्वं य देव नियमेन मद्न्वयानाम
आध्यस्य न कुल पथेः वकुलाभिरामं
श्रीमद तदंग्री युगलं प्रणमामि मुर्धना!!

तिरुवाय्मोळि पिल्लै

श्रीमती श्यामला शर्मा
मोबाइल - ८२०८७४३८१०

तिरुनक्षत्र - वैशाख मास, विशाख नक्षत्र

अवतार स्थल - कुंतिनगरम् (कोंतगै)

आचार्य - पिल्लै लोकाचार्य

शिष्य गण - अळगिय मणवाल मामुनि, शठगोप जीयर (भविष्यदाचार्य सन्निधि), तत्वेष जीयर इत्यादि

परमपद स्थल - आळवार तिरुनगरि

ग्रंथ रचना सूची - पेरियाळवार तिरुमोळि स्वापदेशम्

वे तिरुमलै आळवार के रूप में अवतरित होकर कई नामों जैसे - श्री शैलेशर, शठगोप दासर इत्यादि और अंततः तिरुवाय्मोळि का प्रसार और प्रचार के कारण तिरुवय्मोळि पिल्लै के नाम से विख्यात हुए।

तिरुमलै आळवार के बाल्य अवस्था में उनका पंचसंस्कार स्वयं श्री पिल्लैलोकाचार्य स्वामीजी ने किया। वे द्रविड भाषा के प्रख्यात विद्वान और उत्कृष्ट प्रबंधक हुए। वे संप्रदाय तत्त्वों पर भिन्न अभिप्राय रखते हुए संप्रदाय से अलग होकर मधुरै राज्य के मुख्य सलाहकार हुए जब राजा की मृत्यु अचानक कम उम्र में हुई और उनके पुत्रों का पालन-पोषण की जिम्मेदारी आळवार के हाथों रख दिया। पिल्लैलोकाचार्य अपने अंतकाल में तिरुमलै आळवार पर विशेष अनुग्रह होने के कारण, अपने शिष्य कूरकुलोत्तम दास को उपदेश देते हुए कहा- मेरे अन्य शिष्यों के साथ तिरुमलै आळवार में परिवर्तन करें और सत्संप्रदाय के अगले मार्ग दर्शक के रूप में नियुक्त करें। अपने आचार्य का श्रीवचन का पालन करते हुए तिरुमलै आळवार को परिवर्तन करने का साहस कार्य उठाये।

एक बार जब तिरुमलै आळवार पालकी पर भ्रमण कर रहे थे, उसी समय उनकी भेंट कूरकुलोत्तमदास से होती है जो तिरुविरुत्तम् का पाठ करते हुए जा रहे थे। श्री पिल्लैलोकाचार्य के कृपापात्र तिरुमलै आळवार कूरकुलोत्तमदास के विशिष्ट वैभव को समझकर पालकी से उतरकर उनसे विनम्रतापूर्वक तिरुविरुत्तम् और उसके अर्थ सीखने की इच्छा व्यक्त किया। कूरकुलोत्तमदास ने यों ही उनके पीठ पर थपकी देते हुए कहा कि वे उन्हें इसे नहीं सिखायेंगे। तिरुमलै आळवार सात्विक होने के कारण अपने अनुचरों को इशारा करते हुए कहा कि कूरकुलोत्तमदास की प्रतिक्रिया को भूल जाए। तिरुमलै आळवार उस स्थान से प्रस्थान हुए। तिरुमलै आळवार ने अपने पालक माता श्री से इस घटना का वर्णन किया तो उन्होंने उनको पिल्लैलोकाचार्य से उनके सम्बंध को याद कराया, उसके पश्चात् यह सोचने लगे कि उन्होंने क्या खो दिया। वे इसी सोच में रह गए। कई दिनों बाद फिर से तिरुमलै आळवार की भेंट कूरकुलोत्तमदास से

होती है जब वे एक हाथी पर बैठकर भ्रमण कर रहे थे। इस समय तिरुमलै आळवार तुरंत उतरकर उनके समक्ष दंडवत प्रणाम करते हुए उनसे विनम्रतापूर्वक ज्ञानार्जन की इच्छा व्यक्त किया। यह देखकर कूरकुलोत्तमदास ने उनको स्वीकार किया और सिखाने का दायित्व लिया। तिरुमलैयाळवार अपने आचार्य कूरकुलोत्तमदास के लिये एक अग्रहार (यानी ऐसी विशेष भूमि जिसे एक उपयुक्त और सक्षम ब्राह्मण को दिया जाता था) की व्यवस्था कर उनसे प्रतिदिन शिक्षा प्राप्त करने लगे। यहाँ श्री कूरकुलोत्तमदास अपने नित्यकैंकर्य करने लगे जैसे तिरुवाराधन इत्यादि। तिरुमलैयाळवार प्रशासनिक कार्यों में व्यस्त रहने के कारण, श्री कूरकुलोत्तमदास को विनम्र होकर निवेदन किया कि जब वे जिस समय तिरुमांकाप्पु (तिलक) को लगाते हैं उस समय उनसे मिलने हर रोज आए। श्रीदासजी ने यह स्वीकार किया और उनसे मिलने हर रोज़ आने लगे। पहले दिन उन्होंने देखा कि- श्री पिल्लैलोकाचार्य के तनियन का पाठ करते हुए तिरुमलैयाळवार तिलक धारण कर रहे थे। यह देखकर उन्हें बहुत खुशी हुई और प्रसन्न होकर उन्हें दिव्यप्रबंधों का सारांश ज्ञान देने लगे। इसी दौरान तिरुमलैयाळवार फिर से प्रशासनिक कार्यों की वजह से अध्ययन के लिए नहीं आये और इससे निराश श्रीदासजी ने उनसे हर दिन मिलने का कार्य स्थगित कर दिया। तिरुमलैयाळवार यह जानकर श्रीदासजी से फिर से विनम्रतापूर्वक निवेदन किया कि उन्हें वापस प्रशिक्षण दें और भूल केलिए क्षमा करें। श्रीदासजी ने उनके निवेदन को स्वीकार किया और उनको अपना शेष प्रसाद दिया। उसके पश्चात् उन्होंने प्रशासनिक कार्य राजकुमार को सौंपकर श्रीदासजी के चरणकमल का आश्रय लिया और उनकी सेवा में जुट गए।

अपने अंतिम काल में श्रीदासजी ने तिरुमलैयाळवार को उपदेश दिया कि वे श्री तिरुक्कण्णंगुडि पिल्लै से तिरुवाय्मोळि और श्रीविळांचोलै पिल्लै से रहस्यग्रंथ सीखें। उसके पश्चात् उन्होंने श्री तिरुमलैयाळवार को ओराण्वळि के अंतर्गत अगले आचार्य के रूप में नियुक्त किये।

अनुवादक टिप्पणि - नम्पिल्लै ने ईडुव्याख्यान ईयुण्णिमाधवपेरुमाल को सौंपा उसके बाद जिन्होने अपने सुपुत्र ईयुण्णिपद्मनाभपेरुमाळ को यह ग्रंथ सिखाया। नलूरपिल्लै श्री ईयुण्णिपद्मनाभपेरुमाल के प्रत्यक्ष शिष्य थे जिन्होने पूर्णरूप से इस दिव्यग्रंथ को मूल और अर्थ सहित सीखा और बाद में अपने पुत्र श्री नालूराच्चानपिल्लै को सिखाया। इसी दौरान श्री देवपेरुमाल नालुरपिल्लै को ज्ञात कराते हैं कि वे श्री तिरुमलैयाळवार को शेष तिरुवाय्मोळि शब्दार्थ सहित सिखायें। श्री नालूरपिल्लै भगवान श्री देवपेरुमाल से कहते हैं- वृद्ध होने के कारण वे सिखाने में असमर्थ हैं। अतः आप कोई अन्य व्यक्ति को इस कार्य के लिये नियुक्त करें। यह सुनकर श्रीदेवपेरुमाल ने कहा- कोई अन्य क्यों? आपके सुपुत्र को हम यह कार्य सौंपेंगे, क्योंकि अगर वे सिखायेंगे, तो वह आपके सिखाने के बराबर होगा। इतना कहकर भगवान अंतर्धान हो गये। यह दिव्याज्ञा सुनकर श्रीनालूर पिल्लै तिरुमलैयाळवार को स्वीकार किया और श्रीनालूर आच्चान पिल्लै के पास लाकर उनको महाग्रंथ को सिखाने लगे।

नालूर आच्चान (जो देवराज के नाम से सुप्रसिद्ध हैं) शब्दार्थ सहित श्रीतिरुमलैयाळवार को तिरुवाय्मोळि सिखाने लगे। इन घटनाओं को जानकर श्री तिरुनारायणपुरतु आयि, तिरुनारायणपुरतु पिल्लै इत्यादि उनसे निवेदन करते हैं- ईडु महाग्रंथ का कालक्षेप तिरुनारायणपुरम में करें जिससे वे भी इस ग्रंथ का

अर्थ समझकर लाभ उठा सके। निवेदन स्वीकार कर, श्री नालूर आच्चान और तिरुमलैयाळवार, तिरुनारायणपुरम् पहुँचकर श्री एम्पेरुमान, यतुगिरि नाच्चियार, शेल्वपिल्लै इत्यादियों का मंगलाशासन करके कालक्षेप का आरंभ किया। तिरुनारायणपुरम् में श्री तिरुमलैयाळवार ने पूर्ण रूप से मूल और शब्दार्थ सहित इस ग्रंथ को सीखा और उनके सेवाभाव को देखकर श्री नालूर आच्चान पिल्लै ने उनको इनवायर, तलैयवर तिरुवाराधन पेरुमाळ, को भेंट के रूप में दिया। इस प्रकार, ईडु महाग्रंथ का प्रचार नालूर आच्चान् पिल्लै के विद्वान शिष्य परंपरा के माध्यम से हुआ - तिरुमलै आळवार, तिरुनारायणपुरतुजीयार, तिरुनारायणपुरत्तुपिल्लै।

तिरुमलैयाळवार सीखने के पश्चात् आळवार तिरुनगरि के लिये रवाना होते हैं और वहीं निवास करने का निश्चय लेते हैं। वहाँ जाकर उन्हें पता चलता है कि नम्माळवार के बाद आळवार तिरुनगरि एक विशाल जंगल की तरह हो चुका है। यह जानकर सबसे पहले आळवार तिरुनगरि को जंगल की झाडियों और लकडियों से मुक्त कराते हैं। इसी कारण वे काडुवेट्टिगुरु के नाम से सुप्रसिद्ध हुए (क्योंकि वे पहले मात्र आचार्य थे जिन्होंने इस जंगल को साफ किया और इस क्षेत्र को सुन्दर रूप में रूपान्तर किया)। इसके पश्चात् वे नम्माळवार को तिरुक्कनंबि से आळवार तिरुनगरि लाते हैं और भगवदार्चन की स्थापना करते हैं। वे श्रीरामानुजाचार्य के लिये आळवार तिरुनगरि के दक्षिण भाग में एक छोटा देवस्थान की स्थापना करते हैं (भविष्यदाचार्य का तिरुमेनि यानि नाम श्री नम्माळवार ने अपने तिरुवाय्मोळि में प्रतिपादित किया) और इसके अतिरिक्त चतुर्वेदि मंगलम् (यानी चार रास्तों) का निर्माण और दस परिवारों के साथ एक वृद्ध विधवा श्रीवैष्णव माताश्री को नियुक्त कर उन्हें भगवद्-भागवत् कैंकर्य में संलग्न कराते हैं। श्री तिरुमलैयाळवार सदैव श्री नम्माळवार के वैभव का गुणगान किया करते थे और तिरुवाय्मोळि का पाठ कराने और सिखाने के कारण वे तिरुवाय्मोळिपिल्लै से प्रसिद्ध हुए।

इसके पश्चात् श्री तिरुवाय्मोळिपिल्लै तिरुवंतपुरम् जाकर श्रीविळांचोलैपिल्लै से रहस्य ग्रंथ सीखने हेतु रवाना हुए। विळान्चोलैपिल्लै श्रीपिल्लैलोकाचार्य के प्रसिद्ध और करीबी शिष्य माने गये हैं। तिरुवाय्मोळिपिल्लै का आगमन जानकर अपने आचार्य पर एक चित्त और एकाग्रचित्त होकर और श्री पिल्लैलोकाचार्य पर ध्यान करते हुए श्री विळान्चोलैपिल्लै ने पूर्णरूप से तिरुवाय्मोळिपिल्लै को रहस्य ग्रंथ सिखाया और अपने कृपा के पात्र बनाकर उन्हें वरदान दिया। इसके बाद श्री तिरुवाय्मोळिपिल्लै फिर आळवार तिरुनगरि को लौट जाते हैं। कुछ समय बाद श्री विळान्चोलैपिल्लै अपना देह त्यागने की इच्छा व्यक्त करते हैं और तुरंत ही परमपद को प्रस्थान कर अपने आचार्य के दिव्यचरणकमलों की सेवा में संलग्न होते हैं। श्री विळान्चोलैपिल्लै के चरमकैंकर्य श्री तिरुवाय्मोळिपिल्लै स्वयं दिव्यभव्य रूप से करते हैं।

कुछ समय बाद श्रीपेरियपेरुमाळ (भगवान श्रीमन्नारायण) अपने नित्यसूरी सेवक श्री आदिशेष को आज्ञा देते हैं कि वे फिर से इस भौतिक जगत में अवतार लिये। और उनका कर्तव्य यह था कि वे बहुत सारे बद्ध जीवात्माओं को परमपद दि लायें। श्रीमन्नारायण के वचन सुनकर श्री तिरुवनंताळवान ने यह सेवा स्वीकृत किया और इस भौतिक जगत में तिगळकिडंतान् तिरुनाविरुडयपिरान और श्रीरंगनाच्चियार के पुत्र (श्री अळगिय मणवाळ पेरुमाळ नायनार) के रूप में इक्यासि तिरुनक्षत्र में प्रकट होने वाले चौहत्तर सिंहासनाधिपतियों

में से गोमदाळवान के वंशज थे। उनका पालन-पोषण उनकी माताश्री ने स्वयं सिक्किल्किदारम् में किया था जहाँ उन्होंने सामान्य शास्त्र और वेदाध्ययन अपने पिताश्री से सीखा था। तिरुवाय्मोळि के वैभव को सुनकर श्री अळगिय मणवाल पेरुमाल नायनार आळवार तिरुनगरि जाकर उनके शिष्य बनते हैं और उनकी सेवा करने लगते हैं और उनके मार्गदर्शन में वे अरुळिच्चेयल और अन्य ग्रंथों का कालक्षेप करते हैं। श्रीतिरुवाय्मोळि के मार्गदर्शन के माध्यम से श्री अळगिय मणवाल पेरुमाल नायनार भविष्यदाचार्य की आराधना परिपूर्ण प्रेम तथा भक्ति भाव से करते हैं और यतिराज की महिमा का वर्णन करते हुए यतिराजविंशति नामक स्तोत्र की रचना करते हैं। तिरुवाय्मोळिपिल्लै के शिष्य यह समझने का प्रयास करते हैं कि उनके आचार्य को यह बालक (श्री वरवरमुनि) से क्यों उतना प्रेम और लगाव है? इसके उत्तर में श्रीतिरुवाय्मोळिपिल्लै कहते हैं कि यह बालक साक्षात् श्रीरामानुजाचार्य, श्री आदिशेष हैं जिन्होंने यह रूप धारण किया है।

अपने अंत काल में श्रीतिरुवाय्मोळिपिल्लै को अगले उत्तराधिकारी की चिंता होती है जो इस सत्सांप्रदाय का प्रचार प्रसार कर पायें। उस समय श्रीअळगिय मणवाल पेरुमाल नायनार प्रतिज्ञा लेते हैं कि वे उनके उत्तराधिकारी बनेंगे और इस कार्य को भली-भांति करेंगे। इस प्रकार उन्होंने अपने आचार्य के दिव्यवचनों का पालन किया। अति प्रसन्न होकर श्री तिरुवाय्मोळिपिल्लै ने अळिगय मणवाल पेरुमाल नायनार से कहा कि उन्हें श्रीभाष्य सीखना चाहिये और सीखने के पश्चात् वे श्री पेरियपेरुमाळ का मंगलाशासन करते हुए तिरुवाय्मोळि और इस दिव्यप्रबंध के व्याख्यान पर ही ध्यान केंद्रित करें। तिरुवाय्मोळिपिल्लै अपने शिष्यों को बताते हैं कि वे सारे अळगिय मणवाल पेरुमाल का सम्मान करें और समझे कि वे एक विशेष अवतार हैं। इसके पश्चात् श्री तिरुवाय्मोळिपिल्लै अपने आचार्य पिल्लैलोकाचार्य का ध्यान करते हुए अपना देह त्यागकर परमपद को प्रस्थान हुए। अळिगय मणवाल पेरुमाल और कई अन्य तिरुवाय्मोळिपिल्लै के शिष्य से उनका चरमकैंकर्य दिव्यभव्य रूप से करवाते हैं।

जिस प्रकार श्रीरामानुजाचार्य ने पेरियनंबि (परांकुश दास) के चरणकमलों का आश्रय लिया उसी प्रकार श्री अळगिय मणवाल पेरुमाल ने श्री तिरुवाय्मोळिपिल्लै (शठकोप दास) के चरणकमलों का आश्रय लिया। श्री अळगिय मणवाल पेरुमाल के विशेष अनुग्रह और दिव्यकैंकर्य कोशिशों से वर्तमान आळवारतिरुनगरि प्रचलित रूप में है। श्रीतिरुवाय्मोळिपिल्लै ने अपना जीवन केवल नम्माळवार और तिरवाय्मोळि का प्रचार प्रसार करने के लिये समर्पित किया जो केवल श्री पिल्लैलोकाचार्य के दिव्यवचनों पर आधारित है। इस प्रकार से प्राप्त शिष्यों को श्री अळगिय मणवाल पेरुमाल को सौंपकर परमपद को प्रस्थान हुए। श्री तिरुवाय्मोळिपिल्लै के दिव्यकैंकर्य की बदौलत ईडु व्याख्यान हमारे लिये उपलब्ध है जिसका प्रसार प्रचार श्री अळगिय मणवाल पेरुमाल ने सर्वोच्च शिखर पर किया।

चलिये अब हम श्री तिरुवाय्मोळिपिल्लै के चरणकमलों का आश्रय लेते हुए प्रार्थना करें कि हमें भी भगवान श्रीरामानुजाचार्य और अपने आचार्य के प्रति लगाव, प्रेम तथा भक्ति हो।

तनियन -

नमः श्रीशैलनाथाय कुन्ती नगर जन्मने।
प्रसादलब्ध परम प्राप्य कैंकर्यशालिने।।

श्रीवेदव्यास भट्टर

श्री कमल. अजोय सरफ
मोबाइल - ९३४२५३५९०५

जन्म नक्षत्र - वैशाख मास, अनुराध नक्षत्र

अवतार स्थल - श्रीरंगम

आचार्य - श्रीगोविंदाचार्य स्वामीजी

परमपद प्राप्त स्थल - श्रीरंगम

श्रीवेदव्यास भट्टर श्रीकुरेश स्वामीजी के यशस्वी पुत्र और श्रीपराशर भट्टर स्वामीजी के अनुज थे। उन्हें श्रीराम पिल्लै, श्रीराम सूरी आदि नामों से भी जाना जाता है। सुदर्शन सूरी (श्रुत प्रकाशिक भट्टर), जिन्होंने श्रीभाष्य पर व्याख्यान लिखा है, वे श्रीवेदव्यास भट्टर के वंशज हैं।

श्रीकुरेश स्वामीजी और आंडाल के यहाँ श्रीरंगनाथ भगवान के प्रसाद से दोनों ही भट्टर बंधुओं का जन्म हुआ। एक रात को जब श्रीकुरेश स्वामीजी और आंडाल बिना प्रसाद पाये लेटे थे, तब वे मंदिर की अंतिम नैवेद्य घंटी सुनते हैं। आंडाल भगवान से कहती है ''यहाँ आपके अनन्य भक्त, श्रीकुरेश स्वामीजी बिना प्रसाद पाये बैठे हैं और आप वहाँ अंदर उत्तम भोग ले रहे हैं।'' यह जानकर श्रीरंगनाथ भगवान उत्तम नम्बि द्वारा श्रीकुरेश स्वामीजी और आंडाल को अपना प्रसाद सभी साज-सामान के साथ भिजवाते हैं। प्रसाद को आते हुए देखकर आळवान चकित रह जाते हैं। वे तुरंत आंडाल से पूछते हैं - ''क्या आपने भगवान से प्रार्थना की थी'' और आंडाल उनके द्वारा किये हुए अनुरोध को स्वीकार करती है। श्रीकुरेश स्वामीजी उनके द्वारा प्रसाद के लिए भगवान से किये हुए आग्रह से व्याकुल हो जाते हैं। वे केवल दो मुट्ठी प्रसाद ही स्वीकार करते हैं, कुछ पाकर, शेष प्रसाद आंडाल को दे देते हैं। उस दो मुट्ठी प्रसाद के फलस्वरूप उन्हें दो सुंदर बच्चों का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

दोनों बालकों के जन्म के १२ दिन बाद श्रीरामानुज स्वामीजी, श्रीगोविंदाचार्य स्वामीजी अपने सभी शिष्यों के साथ आळवान के घर पधारते हैं। वे एम्बार से बालकों को बाहर लाने के लिए कहते हैं। बालकों को लाते हुए, एम्बार उनके कानों में द्वय महामंत्र का उच्चारण करते हैं और उन्हें श्रीरामानुज स्वामीजी को सौंप देते हैं। श्रीरामानुज स्वामीजी तुरंत पहचान जाते हैं कि वे दोनों द्वय मंत्रोपदेश प्राप्त कर चुके हैं। वे एम्बार से कहते हैं कि वे हीं उनके आचार्य हो। एम्बार सहर्ष उसे स्वीकार करते हैं और उन्हें संप्रदाय के सभी दिव्य सिद्धांतों का उपदेश देते हैं। तब एम्पेरुमानार, सनातन धर्म में ऋषि पराशर और ऋषि

वेदव्यास के योगदान के लिए उनकी स्मृति में बालकों के नाम पराशर भट्टर और वेदव्यास भट्टर रखते हैं। इस तरह वे आलवन्दार के प्रति अपनी एक प्रतिज्ञा पूर्ण करते हैं, जहाँ उन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि वे ऋषि पराशर और वेदव्यास के प्रति आभार प्रकट करने के लिए कोई कार्य करेंगे।

दोनों भाइयों में से श्रीपराशर भट्टर स्वामीजी अल्प आयु तक जीवित रहे और संसार छोड़ने की अपनी तीव्र इच्छा से परमपद प्रस्थान किया। आंडाल (भट्टर की माता) भट्टर के अंतिम क्षणों में बड़ी उदार थी, और भट्टर के अंतिम संस्कारों की देख-रेख आनंद सहित करती हैं, इस विचार से कि भट्टर स्वयं भगवान श्रीमन्नारायण की नित्य सेवा करने के लिए परमपद जाना चाहते थे। अंतिम संस्कारों के पूर्ण होने पर, वेदव्यास भट्टर घर लौटकर पराशर भट्टर के वियोग में व्याकुल होकर रोने लगते हैं। आंडाल, वेदव्यास, भट्टर को सांत्वना देती है और उनसे पूछती है क्या वे पराशर भट्टर के परमपद प्रस्थान पर उनसे ईर्ष्या करते हैं। वेदव्यास भट्टर तुरंत अपनी गलती को समझ जाते हैं, स्वयं को सांत्वना देते हैं, और अपनी माता से क्षमा याचना करते हैं और पराशर भट्टर के परमपद गमन का उत्सव जारी रखते हैं।

पेरिय पेरुमाल वेदव्यास भट्टर को अपनी सन्निधि में आमंत्रित करते हैं और उनसे कहते हैं कि ''ऐसा मत सोचो कि पराशर भट्टर ने तुम्हें छोड़ दिया है। मैं यहाँ तुम्हारे पिता के समान ही हूँ।'' तब वेदव्यास भट्टर संप्रदाय को श्रीवेदांती स्वामीजी जैसे अन्य दिग्गजों के साथ नेतृत्व करते हैं।

हमारे व्याख्यानों में कई उदाहरण है जहाँ श्रीवेदव्यास भट्टर की महिमा को देखा जा सकता है। उनमें से कुछ हम अब देखेंगे हैं -

१) तिरुमालै ३७ - श्रीपेरियावाचन पिल्लै स्वामीजी की व्याख्यान - इस पाशुर में, श्रीभक्तांघ्रिरेणु स्वामीजी समझाते हैं कि श्रीरंगनाथ भगवान हमारे नित्य संबंधी हैं और वे हर समय हमारी रक्षा करते हैं। इस संदर्भ में यह देखा गया है कि जब वेदव्यास भट्टर पीड़ा की अवस्था से गुजर रहे थे, श्रीपराशर भट्टर स्वामीजी उन्हें यह सिद्धांत समझाते हैं और उन्हें पूर्णतः पेरिय पेरुमाल का आश्रय लेना चाहिए।

२) मुदल तिरुवन्दादि ४ - श्रीकलिवैरीदास स्वामीजी / श्रीपेरियावाचन पिल्लै स्वामीजी की व्याख्यान- सरोयोगी स्वामीजी बताते हैं कि अगस्त्य, पुलस्त्य, दक्ष और मार्कंडेय को रुद्रजी भगवत विषय समझा रहे थे (जैसे कि वे भगवान के विषय में सब कुछ जानते हैं)। जब वेदव्यास भट्टर रुद्र पर इस प्रकार व्यंग करते हैं, तब श्रीपराशर भट्टर स्वामीजी कहते हैं ''जब रुद्र के मस्तिष्क पर तमोगुण का प्रभाव रहता है वह विमूढ़ हो जाते हैं, पर अब वह भगवत विषय के अनुसरण में लगे हुए हैं - इसलिए अब उनकी आलोचना न करो।''

३) श्रीसहस्रगीति - श्रीकलिवैरीदास स्वामीजी ईडु व्याख्यान - इस पाशुर में, श्रीशठकोप स्वामीजी तिरुमन्त्र का अर्थ समझाते हैं। इस परिपेक्ष्य में निम्पिल्लै एक सुंदर दृष्टांत बताते हैं। अष्टाक्षर मंत्र का अर्थ केवल आचार्य से ही सुनना चाहिए। एक बार श्री कुरेश स्वामीजी इस पाशुर को समझाते हुए कालक्षेप में, अपने दोनों पुत्रों की उपस्थिति का अनुभव करते हैं। वे उनसे कहते हैं कि वे लोग श्रीगोविन्दाचार्यजी (उनके आचार्य) के पास जाकर उनसे इसके अर्थ जान लें। वे दोनों उनकी बात मानकर वहाँ से जाने लगते हैं। परंतु फिर श्रीकुरेश स्वामीजी उन्हें बुलाकर

कहते हैं ''इस संसार में सब कुछ इतना अल्पकालिक है कि हो सकता है तुम लोग आचार्य के मठ तक ठीक तरह से पहुँच न पाओ (तुम्हें रास्ते में कुछ भी हो सकता है)। इसलिए मैं स्वयं ही तुम्हें अष्टाक्षर मंत्र का अर्थ सिखाता हूँ'' और फिर उन दोनों को वह अर्थ समझाते हैं। एक श्रीवैष्णव को कैसा होना चाहिए- दूसरों के आत्मिक कल्याण के प्रति अति दयालू और दूसरों से अलग श्रीकुरेश स्वामीजी इस बात का श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

४) श्रीसहस्रगीति - कलिवैरीदास स्वामीजी ईडु व्याख्यान (प्रस्तावना खंड) - इस दशक में श्री शठकोप स्वामीजी तिरुमालीरुनचोल्लै अज्हगर के अनुभवों को नियंत्रित रखने में असमर्थ हैं। यहाँ वेदव्यास भट्टर पराशर भट्टर से एक प्रश्न पूछते हैं। ''आळवार क्यों इतनी पीड़ा में हैं और अर्चावतार भगवान के दर्शन अनुभव करने में असमर्थ हैं जबकि परमपद या विभव (जो अवतार बहुत समय पहले हुए थे) के समान न होकर अर्चावतार में भगवान ठीक हमारे सामने हैं?'' पराशर भट्टर कहते हैं ''अल्पबुद्धि व्यक्ति के लिए भगवान के ५ अलग रूप (पर, व्यूह, विभव, अर्चा, अंतर्यामी) एक दूसरे से भिन्न हैं। परन्तु उनके लिए जिन्होंने सिद्धांतों को पूर्णतः समझ लिया है सभी रूप एकमात्र उन्हीं भगवान का प्रतिनिधित्व करते हैं, वे सभी रूप सारे गुणों से परिपूर्ण हैं। परन्तु अब, आळवार तिरुमालीरुनचोल्लै अज्हगर की सुंदरता से अभिभूत हैं और वे अपने गुणानुभाव और भावनाओं को नियंत्रित रखने में असमर्थ हैं।''

५) श्रीसहस्रगीति - कलिवैरीदास स्वामीजी ईडु व्याख्यान - जब पराशर भट्टर तिरुक्कोलूर के वैत्तमानिधि भगवान के मंदिर के आस-पास के सुंदर बगीचे आदि का वर्णन करते हैं, वेदव्यास भट्टर उन्हें एम्बार द्वारा दिए गए उस विस्तृत वर्णन का स्मरण कराते हैं जहाँ आळवार का मन दिव्यदेश की सुंदरता देख कर अति आनंदित हो जाता है।

६) श्रीसहस्रगीति - कलिवैरीदास स्वामीजी ईडु व्याख्यान - जब दोनों भट्टर विवाह के लिए योग्य हुए, आंडाल आळवान से कहती है कि वे जाये और जाकर पेरिय पेरुमाल को इसके बारे में बतायें। आळवान कहते हैं ''भगवान के परिवार के लिए हम क्यों चिंता करें?''- वे इस पूर्णता से भगवान को समर्पित थे कि किसी भी तरह के स्व-प्रयासों में संलग्न नहीं होते थे। जब आळवान पेरिय पेरुमाल के समक्ष गये, पेरिय पेरुमाल स्वयं उनसे पूछते हैं कि क्या वे कुछ कहना चाहते हैं। आळवान प्रति उत्तर में कहते हैं ''अन्य लोग कहते हैं, दोनों भाइयों का विवाह अब हो जाना चाहिए'' और फिर भगवान उनके विवाह की व्यवस्था करते हैं।

इस तरह हमने वेदव्यास भट्टर के गौरवशाली जीवन की कुछ झलक देखी। वे भागवत निष्ठा में पूर्णतः स्थित थे और एम्पेरुमानार के बहुत प्रिय थे। हम सब उनके श्री चरण कमलों में प्रार्थना करते हैं कि हम दासों को भी उनकी अंश मात्र भागवत निष्ठा की प्राप्ति हो।

वेदव्यास भट्टर की तनियन

पौत्रं श्री राममिश्रास्य श्रीवत्सांगस्य नंदनं।

रामसूरीं भजे भट्टपराशरवरानुजम।।

श्रीवररंगाचार्य स्वामीजी

(तिरुवरंग पेरुमाळ अरैयर)

- श्री दिनेश. टोडि
मोबाइल - ७४९८२५६७८८

तिरुनक्षत्र - वैशाख मास, ज्येष्ठ नक्षत्र

अवतार स्थल - श्रीरंगम

आचार्य - मणक्काळल नम्बि, आळवन्दार्

शिष्य - श्रीरामानुज स्वामीजी (ग्रंथ कालक्षेप शिष्य)

परमपद प्राप्ति स्थल - श्रीरंगम

श्रीवररंगाचार्य स्वामीजी श्रीयामुनाचार्य स्वामीजी के सुपुत्र तथा शिष्य गण में मुख्य थे। श्रीवररंगाचार्य स्वामीजी संगीत, नृत्य और नाटक के महान कोविद थे। अध्ययन उत्सव के अरैयर सेवा में, श्रीरंगनाथ भगवान के उपस्थिति में, तिरुवाय्मोळि के ''केडुमिडर'' पदिग का गान कर रहे थे। उस समय में गोष्ठी के नेता आळवंदार की ओर देखते हुए ''नडमिनो नमर्गळउळ्ळर् नामुमक्कु अरिय चोणोम्'' का गान करते हैं अर्थात् ''मेरे प्यारे भक्तों, इसी वक्त तिरुवनंतपुरम जाईये।'' आळवन्दार इसे नम्पेरुमाल का संदेश मानते हैं और तिरुवनंतपुरम के अनंत शयन पेरुमाल का मंगलाशासन करने के लिए निकल पड़ते हैं। आळवंदार के अंतिम काल में बताई गई बातों से पता चलता है कि अरैयर को श्रीमुनीवाहन स्वामीजी के प्रति बहुत लगाव था। तिरुवरंग पेरुमाल अरैयर को श्रीरंगनाथ भगवान और श्रीमुनीवाहन स्वामीजी के प्रति अत्यंत भक्ति थी और इसी कारण अपने आखरी समय आळवंदार सभी लोगों को उनके प्रति लगाव बढ़ाने की सलाह देते हैं। इनकी ऐसी महानता है कि स्वयं आळवन्दार ने सभी के समक्ष इनकी प्रशंसा की है। श्रीरामानुज स्वामीजी का श्रीरंगम में आगमन के पीछे आप ने अहम भूमिका निभाई है। आळवंदार के समय के बाद और श्रीरामानुज स्वामीजी सन्यासाश्रम ग्रहण करने के बाद, श्रीरंगम के सभी श्रीवैष्णव नम्पेरुमाल से प्रार्थना किया करते थे कि श्रीरामानुज स्वामीजी को श्रीरंगम ले आये और तदनंतर इस क्षेत्र में उनके नित्य निवास की व्यवस्था करें। पेरिय पेरुमाळ तुरंत श्रीवरदराज भगवान (देव पेरुमाल) से विनती करते हैं कि श्रीरामानुज स्वामीजी को श्रीरंगम भेजें। श्रीरामानुज उनके बहुत प्रिय होने के कारण श्रीवरदराज भगवान उनकी विनती इन्कार कर देते हैं। उस समय पेरिय पेरुमाल श्रीरामानुज स्वामीजी को श्रीरंगम लाने के लिए एक विशेष योजना बनाते हैं। श्रीवररंगाचार्य स्वामीजी से कहते हैं कि श्रीवरदराज भगवान को संगीत और स्तोत्र बहुत पसंद हैं और जब प्रसन्न होंगे तब कुछ भी देंगे। इस प्रकार श्रीवररंगाचार्य स्वामीजी को आदेश देते हैं कि श्रीवरदराज भगवान को प्रसन्न कर उनसे श्रीरामानुज स्वामीजी को प्रसाद के रूप में प्राप्त करने की प्रार्थना करें।

श्रीवररंगाचार्य स्वामीजी उसके बाद काँचीपुरम की ओर निकलते हैं। वहाँ वरम् तरुम् पेरुमाल अरैयर

(स्थानीय अरैयर) उन्हें गौरव-मर्यादा के साथ स्वागत करके उन्हें अपने तिरुमालि में ले जाकर उनकी अच्छी शुश्रूषा करते हैं। उसके अगले दिन, श्रीवररंगाचार्य स्वामीजी का आगमन सुनकर तिरुकच्चि नंबि उनसे मिलकर, प्रणाम समर्पण कर उनका कुशल-क्षेम पर विचार करते हैं। अरैयर नंबि से उन्हें देव पेरुमाल का मंगलाशासन करने की विनती करते हैं (यह परंपरा है कि जो कोई भी दिव्यदेश दर्शन करने जाते हैं तो उस दिव्यदेश के स्थानीय श्रीवैष्णव के द्वारा ही दिव्यदेश के एम्पेरुमान का दर्शन सेवा करते हैं) नंबि उनकी विनती को स्वीकृत करते हैं और अरैयर देव पेरुमाल के दर्शन कर प्रणाम करते हुए कहा- ''कधा पुनस् शंख रथांग कल्पक ध्वज अरविंद अंगुच वज्र लाञ्चनम्: त्रिविक्रम त्वच्चरणांभुज द्वयं मदिया मूर्द्धनम् अलंकरिष्यति'' मतलब ''ओह त्रिविक्रम! शंख, सुदर्शन चक्र, कल्पवृक्ष, कमल इत्यादि दिव्य चिह्नों से प्रकाशित चरण कमल कब मेरे सिर को अलंकृत करेंगे।'' अपने अर्चक के द्वारा एम्पेरुमान उन्हें तीर्थं, प्रसाद और श्रीशठगोप इत्यादि प्रसाद करते हैं और उन्हें अपने सामने अरैयर सेवा करने का आदेश देते हैं। अरैयर उत्कृष्ट भक्ति और प्रेम से अनेकानेक श्लोक, आळ्वार के श्रीसूक्त से अभिनय पूर्वक गान करते हैं। एम्पेरुमान बहुत प्रसन्न हो जाते हैं और अनेक भेंट प्रसादित करते हैं। अरैयर उन भेंट को नकार देते हैं क्योंकि देव पेरुमाल ही हैं जो सभी की इच्छाओं की पूर्ति करते हैं, एम्पेरुमान् उनकी भी इच्छा पूर्ति करेंगे। एम्पेरुमान् राजी होते हैं और कहते हैं ''मुझे और मेरी अर्धांगिनी के अलावा जो भी चाहो तुम माँग सकते हो।'' अरैयर श्रीरामानुज की ओर इशारा करते हैं और उन्हें श्रीरंगम ले जाने की प्रस्तावना करते हैं। देव पेरुमाल कहते हैं ''मैंने नहीं सोचा कि आप उन्हें पूछने वाले हैं, कुछ और माँगिये।'' अरैयर जवाब देते हैं ''आप दूसरे और नहीं हैं स्वयं श्रीराम के अवतार हैं- आप मेरे विनती को टाल नहीं सकते हैं।'' देव पेरुमाल आखिर, उनकी विनती स्वीकार करते हैं और श्रीरामानुज को विदा करते हैं। अरैयर श्रीरामानुज का हाथ पकड़कर, श्रीरंगम की ओर चल पड़ते

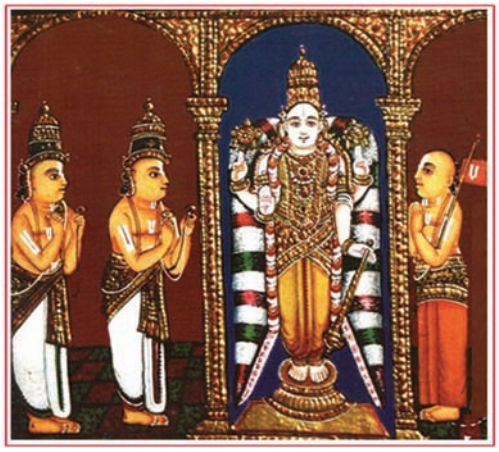

हैं, श्रीरामानुज, आंडान और आळवान के मठ जाकर, तिरुवाराधन पेरुमाल (पेररुळाळन) और आराधन के लिये आवश्यक वस्तु सामग्री लाने को कहते हैं और सब मिलकर देव पेरुमाल से आज्ञा लेकर श्रीरंगम निकल पड़ते हैं। इस तरह उन्होंने श्रीवैष्णव सम्प्रदाय के सबसे प्रधान कैंकर्य यानी ''श्रीरामानुज को श्रीरंगम लाकर, दृढता पूर्वक सम्प्रदाय की स्थापना करने एवं सम्प्रदाय की नई ऊँचाईयों को छूने'' में विशेष पात्र का पोषण किया। उडैवर को पाँच विविध अंश-बोध करने के लिए आळवंदार ने अपने पाँच शिष्यों को नियुक्त किया था। पेरिय नंबि उडैवर को पंचसंस्कार प्रदान करते हैं। पेरिय तिरुमलै नंबि ने उन्हें श्रीरामायण का बोध किया। तिरुकोष्टियूर नंबि ने तिरुमंत्र और चरम श्लोक का ज्ञान प्रदान किया। तिरुमलै आंडान तिरुवाय्मोळि का अर्थ अनुग्रह किया। तिरुवरंगपेरुमाल अरैयर को अरुलिचेयल और चरमोपाय (उत्कर्ष साधन-आचार्य निष्ठ) का कुछ भाग शिक्षा देने का आदेश आळवंदार से प्राप्त हुआ। एम्पेरुमानार तिरुवाय्मोळि का सारार्थ परिपूर्ण रूप से तिरुमलै आंडान से ग्रहण करते हैं। तत्पश्चात् पेरिय नंबि उन्हें अरैयर से संप्रदाय का सार ग्रहण करने की आज्ञा देते हैं। एम्पेरुमानार, शास्त्र से नियमित सिद्धांत का अनुशीलन करते हुए, अरैयर के पास अध्ययन करने से पहले उनकी शुश्रूषा ६ महीने तक करते हैं। प्रति दिन दूध को उचित उष्ण में प्रस्तुत करते थे और साथ ही आवश्यक अनुसार शरीर पर लगाने के लिए हल्दी का मिश्रण भी तैयार करके देते थे।

एक बार एम्पेरुमानार से तैयार किया गया हल्दी का मिश्रण अरैयर को पसंद नहीं आया और उडैवर अरैयर के मुखमंडल को देखकर, जो असंतुष्टि प्रकट कर रहा था, नापसंदगी का कारण जान गए। उडैवर तुरंत हल्दी का दूसरा मिश्रण तैयार करते हैं जो अरैयर के मन को अत्यंत मोहित करता है और तदनंतर अरैयर उन्हें चरम उपाय और उपेय अर्थात् ''आचार्य कैंकर्य'' का बोध कराते हैं। अरैयर शिक्षा देते हैं कि ''आचार्य कोई और नहीं बल्कि एम्पेरुमान जो क्षीर सागर में शयनित हैं उनका प्रत्यक्ष रूप हैं।'' हमने चरमोपाय में इसके बारे में चर्चा की है।

कई ऐधियम् (पूर्वाचार्य के निज़ी जीवन में घटित घटनाएँ) में अरैयर की महानता वर्णित है। आईये कुछ यहाँ देखें -

१) ईडु व्याख्यान ''पालेय तमिळर इशैकारर'' के विवरण में - ''इशैकारर'' अर्थात् संगीत विद्वान और श्रीकलिवैरिदास स्वामीजी श्रीकुरेश स्वामीजी को बताते समय तिरुवरंग पेरुमाल अरैयर को इशैकारर से संबोधित करते हैं।

२) ईडु व्याख्यान में श्रीकलिवैरिदास स्वामीजी विवरण देते हुए बताते हैं जब अरैयर ''ओळिविळ कालमेलाम्'' का गान करते समय, भावुक होकर कालमेलाम् कालमेलाम्, कालमेलाम्, कालमेलाम् (सारा समय) यह कहते हुए ही पाशुर को पूरा करते हैं। इस पदिग में आळवार तिरुवेंकट अमुदायन नित्य कैंकर्य के लिए प्रार्थना करते हैं और इस पदिग को द्वय मंत्र के दूसरी पंक्ति (कैंकर्य प्रार्थना) का विवरण माना जाता हैं। आईये तिरुवरंग पेरुमाल अरैयर के श्रीचरण कमलों में प्रार्थना करें कि हम भी उनकी तरह एम्पेरुमान, आळवार एवं आचार्य के प्रति भक्ति कैंकर्य भाव प्राप्त करें।

तनियन -

ज्येष्ठायां वृषभे जातं यतींद्र चरमार्थदम।
श्रीराममिश्र श्रीपादं वररंग गुरुं भजे।।

वादिकेसरी अळगिय मणवाल जीयर

श्री राजेश. खैतन्

मोबाइल - ९१६३४४३५७९

तिरुनक्षत्र - स्वाति नक्षत्र, ज्येष्ठ मास

अवतार स्थल - मन्नार कोइल (अम्बा समुद्र के निकट)

आचार्य - पेरियवाचान पिल्लै (से पंच संस्कार प्राप्त हुआ), नायनाराचान्पिल्लै (से शास्त्र अभ्यास)

शिष्य / शिष्य गण - यामुनाचार्य (प्रमेय रत्नम, तत्त्व भूषण के लेखक), पिंचेंद्रविल्लि (पिंचेंद्रविल्लि), इत्यादि...

परमपद स्थल - श्रीरंगम् / तिरुवरंगम्

ग्रंथ रचना सूची - तिरुवाय्मोळि १२००० पड़ि व्याख्यान, तिरुविरुत्तम्, स्वापदेश व्याख्यान, द्रविड़ोपनिषद् संगति-तिरुवाय्मोळि संगति श्लोक, आध्यात्म चिंतै, रहस्यत्रय विवरण, दीप संग्रहम, तत्त्व दीपम, दीप प्रकाशिकै, तत्त्व निरूपणम, भगवद्गीता वेन्बा-तमिल में भगवद गीता का अनुवाद, भगवद्गीता व्याख्यान, इत्यादि...

वादिकेसरी अळगिय मणवाल जीयर को उनके माता-पिता से दिया हुआ नाम वरदराजर था। उन्होंने बहुत छोटे उम्र में पेरियवाचान् पिल्लै के शिष्य बनकर तिरुमडपल्लि (रसोईघर) में कैंकर्य करते थे। जब वरदराजर ३२ साल के थे, एक दिन वो शास्त्र चर्चा करने वाले विद्वान लोगों के पास जाकर पूछे - किस शास्त्र की चर्चा हो रही है? उन विद्वान लोगों को यह मालूम था कि वरदराजर को शास्त्र विद्या में प्रवेश नहीं है (शास्त्रों से वे विमुख (अनजान) थे। वरदराजर का परिहास करने के लिए वे सभी कहे - ''मुसलकिसलयम्'' (ऐसा शास्त्र है नहीं) की चर्चा चल रही है। और उन सभी ने वरदराजर को निरक्षर (अज्ञानी) बोलकर उनका परिहास किया। वरदराजर ने पेरियवाचान पिल्लै को इस घटना के बारे में बताया। पेरियवाचान पिल्लै ने कहा - ''तुम विद्याहीन होने के कारण, वे सभी तुम्हारा मज़ाक कर रहे हैं।'' इस घटना से शर्मिंदा होकर पेरियवाचान पिल्लै से प्रार्थना करते हुए वरदराजर ने उनको शास्त्र सिखाने को कहा। अत्यंत दयालु पेरियवाचान पिल्लै ने वरदराजर को काव्य, नाटक, तर्क, अलंकार, शब्द, पूर्व मीमांसा, उत्तर मीमांसा, इत्यादि शास्त्र सिखाना शुरु किया। पेरियवाचान पिल्लै के कृपा के कारण वरदराजर ने सभी शास्त्रों के निपुण होकर मुसलकिसलयम् नामक ग्रंथ निर्माण करके, उनका परिहास करने वाले विद्वानों को यह ग्रंथ प्रस्तुत किये। वरदराजर ने भगवद विषयम इत्यादि शास्त्र नायनाराचान्पिल्लै से सीखा। आचार्य (गुरु) की दया से शिष्य को जरूर अत्यंत उत्तम स्थान प्राप्त होगा, इस सत्य का उत्तम उदाहरण है वरदराजर का जीवन चरित्र। कुछ ही समय में, वरदराजर सांसारिक विषयों से अनासक्त होकर सन्यास आश्रम स्वीकृत करके अळगिय मणवाल जीयर (सुंदर जामातृमुनि) का नाम लिया। तब से अळगिय मणवाल जीयर शास्त्र विषयों में अनेक विद्वान को जीत कर ''वादी केसरी'' (शास्त्र चर्चा में शेर) के नाम से प्रसिद्ध हुए।

अळगिय मणवाल जीयर ने कई ग्रंथों की रचना की। इसमें तिरुवाय्मोळि का हर शब्द का अर्थ १२००० पड़ी की रचना सबसे प्रसिद्ध है। यह १२००० पड़ी अनन्य ग्रंथ है जिसमें अळगिय मणवाल जीयर ने श्री नम्माल्वार के हर एक भावावेश को प्रतिपादित किया। तिरुवाय्मोळि की अनेक विवरण ग्रंथ किये हुए हैं, लेकिन उसमें १२००० पड़ी सर्वोत्तम माना जाता है। अळगिय मणवाल जीयर ने भगवद्गीता सार को तमिल में अत्यंत सरल रीति से अनुवाद किया। इसके अलावा अळगिय मणवाल जीयर ने बहुत रहस्य ग्रंथों की रचना की।

इनके शिष्य यामुनाचार्य (तिरुमालै आण्डान की संतति) ने तत्त्व भूषणम और प्रमेय रत्नम् नामक दो रहस्य ग्रंथों की रचना की। यह दोनों ग्रंथ श्रीवैष्णव सिद्धांत के विषयों से भरा हुआ है।

तिरुवाय्मोळि के सभी व्याख्यानों का विचार करते समय श्री मणवाल महामुनि ने अळगिय मणवाल जीयर की १२००० पड़ी की प्रशंसा किया था। उपदेशरत्नमालै की ४५ पाशुर का अर्थ विचार करेंगे :

अंबोडु अळगिय मणवाल जीयर,

पिनबोरुम कट्ट्ररिन्धु पेशुगैक्का।

तम् पेरिय पोदुमुडन मारन मरैयिन् पोरुल् उरैत्तदु,

एदमिल पन्नीर आयिरम।।

अनुवाद : श्री अळगिय मणवाल जीयर ने अपनी बुद्धि का प्रयोग करते हुए बहुत प्रेम, प्यार और सद्भावना से, श्री नम्माळवार के तिरुवायमोळि को शब्दार्थ सहित अपने १२००० पडि व्याख्यान में प्रस्तुत किया, जो अत्यन्त शुद्ध और दोषरहित है, ताकि भविष्य में प्रत्येक जीव इसका वर्णन आसानी से कर सकें।

पिल्लै लोकम जीयर ने इसका विवरण इस प्रकार सूचित किया :-

१) प्रेमः तिरुवाय्मोळि के बारे में भक्ति। सर्व जनता में दया।

२) यद्यपि लोक में तिरुवाय्मोळि के बारे में ४ विवरण हैं, कभी तिरुवाय्मोळि में कुछ संशय हुआ तो, सभी अळगिय मणवाल जीयर से किये हुए १२००० पड़ी का आश्रय लेते हैं।

३) तिरुवाय्मोळि के बारे में वादिकेसरी अळगिय मणवाल जीयर के ज्ञान को श्री मणवाल महामुनि प्रशंसा करते थे।

४) नम्माल्वार का अनुभव सार को सही तरह से १२००० पड़ी में वर्णन किया गया है। यह पूर्णतः अन्य उपलब्ध व्याख्यानों से समकालिक है।

५) जैसा नम्माल्वार ने अपने तिरुवायमोळि को निष्कलंक कहा है, उसी तरह श्री मणवाल महामुनि कहते हैं कि अळगिय मणवाल जीयर की १२००० पड़ी भी निष्कलंक है।

इस तरह अळगिय मणवाल जीयर का जीवन भागवत लोगों की सेवा में बीता। पेरियवाच्चान पिल्लै और नायनार आच्चान पिल्लै के अत्यंत प्रिय थे। हम सभी ऐसे महापुरुष से प्रार्थना करें कि हम सभी उन्हीं की भांति आचार्य निष्ठ रहें और उनकी सेवा में तत्पर रहें।

वादिकेसरी अळगिय मणवाल जीयर का ध्यान श्लोक :

सुंदरजामातृ मुनेः प्रपद्ये चरणांभुजम्।
संसारार्णव सम्मग्न जन्तु सन्तारपोतकम्।।

श्रीकृष्णपाद स्वामीजी

(वडुक्कु तिरुवीधि पिल्लै)

श्री गोविंदलाल बी. मालपाणी
मोबाइल - ९४०४३१७६३५

तिरुनक्षत्र - मिथुन मास, स्वाति नक्षत्र

अवतार स्थल - श्रीरंगम

आचार्य अनुक्रम - श्रीवैष्णव गुरुपरंपरा में १५वें आचार्य

आचार्य - श्री कलिवैरीदास स्वामीजी
(श्री लोकाचार्य - नंपिल्लै)

शिष्य - पिल्लैलोकाचार्य,
अळगिय मणवाल पेरुमाल नायनार इत्यादि

परमपद प्रस्थान स्थल - तिर्वरुंगम

ग्रंथ - ईडु ३६००० पाडि

तनियन

श्री कृष्णपाद पादाब्जे नमामि शिरसा सदा।
यत्प्रसाद प्रभावेन सर्व सिद्धिरभून्मम।।
तारणे मिथुनाष्टम्यां स्वातिजं सदगुणार्णवम्।
वंदे श्रीकृष्णपादार्यं लोकाचार्य पदाश्रितम्।।

अवतार और आचार्य निष्ठामय जीवन

श्री कृष्णपाद स्वामीजी का अवतार ग्रहण श्रीरंगम में मिथुन मास स्वाति नक्षत्र के शुभ दिन को हुआ। विवाह के पश्चात् गृहस्थाश्रम में होने पर भी श्री कृष्णपाद स्वामीजी प्रारंभ से ही आचार्य निष्ठा में सदैव स्थित थे। उन्हें पुत्रप्राप्ति के विषय में अरुचि थी। यह जानकर उनकी माँ उनके गुरु श्री कलिवैरीदास स्वामीजी के पास जाकर उनसे अपने सुपुत्र के विरुद्ध शिकायत करती है। श्रीकलिवैरीदास स्वामीजी ने यह जानकर अपने शिष्य कृष्णपाद को अपने घर सपत्नीक आने का आमंत्रण देते हैं। श्रीकृष्णपाद स्वामीजी अपनी पत्नी के साथ आचार्य के तिरुमाली में गए। फिर आचार्य श्रीकलिवैरीदास स्वामीजी ने कृष्णपाद स्वामीजी को पुत्र को जन्म देने के कार्य में संलग्न होने का उपदेश दिया। आचार्य के आज्ञानुसार कृष्णपाद स्वामीजी ने उस कार्य को आचार्य प्रीति के लिये संपूर्ण किया। श्रीकृष्णपाद स्वामीजी को एक सत्पुत्र की प्राप्ति हुई। श्रीकलिवैरीदास स्वामीजी (लोकाचार्य) के विशेष अनुग्रह से पुत्र प्राप्ति होने के कारण उन्होंने पुत्र का नाम ''पिल्लै लोकाचार्य'' रखा। परंतु आचार्य उस बालक का नाम अळगिय मणवाल रखना चाहते थे। अपने आचार्य का विचार जानकर कृष्णपाद स्वामीजी ने फिर से एक शिशु को जन्म दिया जिनका नाम ''अळगिय मणवाल पेरुमाल नायनार'' रखा। इस प्रकार श्रीकृष्णपाद स्वामीजी ने दो विशेष रत्नों को जन्म देकर हमारे सत्संप्रदाय को गौरव और वैभवशाली ख्याति प्रदान की।

श्रीकृष्णपाद स्वामीजी और श्रीविष्णुचित्त आल्वार में साम्य

हमारे पूर्वाचार्य श्रीकृष्णपाद स्वामीजी और श्री विष्णुचित्त आल्वार में साम्य बतलाते हैं।

१) दोनों ही मिथुन मास स्वाति नक्षत्र में अवतरित हुए।

२) श्री विष्णुचित्त स्वामीजी ने भगवान की असीम कृपा से तिरुप्पल्लाण्डु, पेरियतिरुमोळि नामक दिव्यप्रबंधों की रचना की। स्वामि वडुक्कु तिरुवीधिपिल्लै ने ईडु (छत्तीस हज़ार) पाडि नामक टिप्पणि प्रस्तुत किये।

३) श्रीविष्णुचित्त स्वामीजी ने अपनी पुत्री गोदा को हमारे सत्सांप्रदाय को सौंपा और उनका पालन-पोषण कृष्णानुभव में किया। उसी प्रकार श्री कृष्णपाद स्वामीजी ने अपने दोनों दिव्यरत्नों जैसे सत्पुत्रों का पालन-पोषण भगवद्-विषय में किया और संप्रदाय के लिए समर्पित किया।

ईडु (छत्तीस हज़ार) - सहस्रगीति पर व्याख्या

श्रीकृष्णपाद स्वामीजी अपने आचार्य श्री कलिवैरिदास स्वामीजी के सहस्रगीति पर आधारित प्रसंगों को हर रोज़ सुनते थे। वे प्रतिदिन रात को इन प्रसंगों को ताम्र पत्रों में लिखने का कार्य किया करते थे। इस प्रकार श्रीकलिवैरिदास स्वामीजी के प्रसंगों को लिखकर ''ईडु'' (छत्तीस हज़ार) नामक ग्रंथ श्रीकलिवैरिदास स्वामीजी के ज्ञान के बिना अवतरित हुआ।

जब श्री कलिवैरिदास स्वामीजी को पता चला तो उन्होंने श्रीकृष्णपाद स्वामीजी से इसका कारण पूछा। तब श्रीकृष्णपाद स्वामीजी बोले, ''आपके प्रसंगों को भविष्य में मैं वापिस पढ़कर मेरे जीवन में इसका उपयोग कर सकूँ।'' श्रीकृष्णपाद स्वामीजी का शुद्ध भाव समझकर आचार्य अति प्रसन्न हुए और अपने शिष्य के इस दिव्य कार्य की प्रशंसा की। श्रीकृष्णपाद स्वामीजी का यह व्याख्यान सर्वत्र प्रसिद्ध हुआ और उसका अत्यंत प्रचार प्रसार हुआ। श्रीकृष्णपाद स्वामीजी ने यह व्याख्यान अपने पुत्र को दिया। उनसे यह व्याख्यान परंपरा से श्रीवरवरमुनी स्वामीजी को प्राप्त हुआ। श्री वरवरमुनी स्वामीजी ने यह ग्रंथ आगे हम जैसे सामान्य जीवों के लिए प्रस्तुत किया।

पिल्लैलोकाचार्य द्वारा श्री कृष्णपाद स्वामीजी का वैभव वर्णन -

पिल्लैलोकाचार्य अपने श्रीवचनभूषण दिव्यशास्त्र में श्रीकृष्णपाद स्वामीजी के दिव्य उपदेशों को दर्शाते हैं जिसके उदाहरण निम्नलिखित हैं -

सूत्र ७७ - जब अहंकार का संपूर्ण त्याग होता है तभी एक जीवात्मा ''अडियेन'' कहलायेगा। यह दिव्य उपदेश का विवरण श्रीकृष्णपाद स्वामीजी ने दिया जो ''यतींद्रप्रणवम'' नामक ग्रंथ में लिखित है।

सूत्र ४३ - पिल्लैलोकाचार्य इस सूत्र में दर्शाते हैं कि प्रत्येक जीवात्मा अपने स्वातंत्र से इस भौतिक जगत में अनगिनत असंखेय चिरकाल से बद्ध है और इन जिवात्माओं का उद्धार तभी होगा जब वे एक सदाचार्य श्रीवैष्णव की शरण लेंगे।

श्रीरामानुज संप्रदाय का पालन और वैकुंठ गमन

श्रीकलिवैरिदास स्वामीजी का परमपद को प्रस्थान होने के पश्चात् श्रीकृष्णपाद स्वामीजी हमारे सत्सांप्रदाय के अगले दर्शन प्रवर्तकाचार्य हुए। वे अपने पुत्रों (पिल्लै लोकाचार्य, अळगिय मणवाल पेरुमाल नायनार) को दिव्य गूडार्थों का सार समझाये। अपने अंतिम काल अपने आचार्य के दिव्यमंगल गुणों का विचार करते हुए वे अपना भौतिक शरीर त्यागकर परमपद के लिए प्रस्थान किए।

(गतांक से)

सियाराम ही उपाय

शरणागति मीमांसा

(पंचम खण्ड)

सियाराम ही उपेय

मूल लेखक
श्री सीतारामाचार्य स्वामीजी, अयोध्या

प्रेषक
दास कमलकिशोर हि. तापडिया
मोबाइल - ९४४९५१७८७९

९८

श्रीमते रामानुजाय नमः

''बिरजा परमव्योम्नो रन्तरा केवलं स्मृतम्।
तदीच्छन्त्यल्पमतयो मोक्षं सुख विबर्जितम्।।''

यानी बिरजा और परंधाम के किसी एक ओर कैवल्य नामक लोक है। वह त्रिपाद्विभूति से अलग है। वहाँ पर परमात्मा के स्वरूप, रूप, गुण विभव आदि के अनुभव का लाभ वहाँ वाले चेतनों को कभी भी प्राप्त नहीं होता। वहाँ का नियम ही ऐसा है। इसलिए शास्त्रों में उसका सुख रहित मोक्ष स्थान के नाम से वर्णन किया है। जो वहाँ जाना चाहते हैं उन्हें अल्प मति कहा है। और त्रिपाद्विभूति कितना सुन्दर तथा आनन्द वाला है उसका वर्णन करते-करते यहाँ तक मुनियों के वचन भी निकल पडे हैं किः-

''एतेवैनि रयास्तात स्थानस्य परमात्मनः।''

इसका अर्थ यह हुआ कि परमात्मा के सदा साक्षात् बिराजने का जो वह परंपद स्थान है; उसके सामने ब्रह्मलोक आदि जो दवताओं के लोक हैं वे नरक के समान प्रतीत होते हैं। श्रीरंगनारायण गुरु कहते हैं कि कहिए महात्मा लक्ष्मीप्रपन्नजी! जिस परंपद का मैं वर्णन करता हूँ वह परमात्मा का एक अनूठा दिव्य लोक है। उसी परंधाम के लिए लाखों महात्मा अनेक प्रकार के कष्टों को सहते हुए संयम, नियम, भजन, कीर्त्तन आदि अनेक अनुष्ठान कर रहे हैं। उसी परंधाम में जाने के लिए कोई भक्ति कर रहे हैं तो कोई शरणागति का अवलम्ब पकड़े हैं तथा कितने ही कर्म ज्ञानादि में लगे हुए हैं। जिन लोगों को शास्त्रों की शैली मालूम नहीं है, चौदह लोक तथा चौदह लोकों का सुख नाशवन्त है। जैसे गीता में भगवान का श्रीमुख वचन है किः-

''आब्रह्म भुवना ल्लोकाः पुनरावर्त्तिनाऽर्जुन।
मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते।।''

यानी हे अर्जुन! पाताल से लेकर ब्रह्मलोक तक जो जीव रहते हैं उनका आवागमन नहीं छूटता है। हे अर्जुन! जो बड़भागी चेतन मुझको प्राप्त कर लेता है वह फिर इस संसार में जन्म नहीं पाता, यानी सदा के लिए मुक्त हो जाता है। इस परमात्मा के श्रीमुख वचन के तरह जिनका अपने दुर्भाग्य वश ध्यान नहीं जमा हुआ है वे देवलोकों में ही जाने की चेष्टा करते हैं। और जिन बड़भागियों को संसार का रूप अत्यन्त भयावह मालूम हो चुका है। और ब्रह्म लोक आदि में जाने वालों का जन्म-मरणादि दुःख दूर नहीं होता, बारम्बार संसार चक्र में उनका आवागमन बना ही रहता है। इस बात को जो भली भाँति जान चुके हैं वे श्रीबिरजा नदी के उस पार कैवल्य लोक का उल्लंघन करके जिस परंपद का वर्णन किया है उसी जगह पर जाने के लिए अनेक प्रयत्न करते हैं। उस परंपद के बाबत प्रत्यक्ष प्रमाण कुछ भी काम नहीं देता है क्योंकि वहाँ से कोई आता जाता तो है नहीं। अनुमान जो दूसरा प्रमाण है वह भी वहाँ के प्रति कुछ काम नहीं करता क्योंकि धुआँ देखकर अग्नि का अनुमान होता है। तब ''पर्वतो वह्निमान धूमत्वान्'' ऐसा कहना होता है। इसका भाव यह हुआ कि एक मनुष्य किसी मनुष्य से कह रहा है देखो भाई! वह पर्वत जो दीख रहा है उसके नीचे जरूर आग है। वह पूछा भाई! दूर की बात तुम्हें कैसे मालूम हुई? वह बोला अनुमान से। फिर वह बोला तुमने अनुमान कैसे किया? वह बोला ''धूम त्वात्'' धुआँ से।

तुम भी देखो नजर आ रहा है। श्री रंगनारायण गुरु कहते हैं कि पर्वत में अग्नि रहने का अनुमान से धुआँ के जरिये कर लिया गया, उसी प्रकार परंपद के निश्चय में कोई भी किसी प्रकार कुछ भी अनुमान लगा ही नहीं सकता। क्योंकि जरिया कुछ दिखता नहीं तो वहाँ अनुमान कैसा? इसलिए उस मोक्ष धाम के बाबत अनुमान प्रमाण भी फेल हो जाता है अब रहा तीसरा ऐतिह्य नाम वाला। प्रमाण इसको भी परंपद के निर्णय में काम नहीं ले सकते हैं। क्योंकि पिता के निर्णय में पुत्र तो नहीं देखा है कि मेरा पिता यही है। गोत्र निर्णय में भी यही बात है। हम लोग तो अपने गोत्र वाले पुरुष को तो नहीं देखे हैं। परन्तु गर्ग, गौतम, शाण्डिल्य, भरद्वाज आदि मुनि लोग जब हुए थे उस वक्त से लेकर आज तक उनकी संतति बराबर चली आ रही है। गौतम जी ने अपने पुत्र को बताया कि हम तुम्हारे गोत्र हैं। उनका पुत्र अपने पुत्र को बताया कि हम गौतम गोत्र हैं। इसी क्रम से एक से एक आज तक कहते हुए चले आ रहे हैं। परन्तु परंपद के निश्चय करने में यह बात लागू नहीं होती है। क्योंकि वेदान्त का खुले शद्धों में कहना है कि ''अनावृत्तिः शद्धात्'' इसका भाव यह हुआ कि परंपद में जाने के बाद उस मुक्त जीव का बिरजा के इस पार फिर आना ही नहीं होता। इस प्रकार शास्त्रों का बारम्बार कहना है। तो जब कि वहाँ जाकर कोई जीव फिर बिरजा के इस पार आता ही नहीं है; फिर कौन किससे कहेगा और कौन किसका सुनेगा। श्री रंगनारायण गुरु कहते हैं कि महात्मा लक्ष्मी प्रपन्न जी! परंपद के निर्णय के बाबत पूर्वोक्त तीनों प्रमाण कुछ भी काम नहीं आते। अब जहाँ ये तीनों प्रमाण फेल हो गये, वहाँ शास्त्रों का वचन काम में लाना पड़ता है। उपनिषदों में लिखा है कि ''तद्विष्णोः परंपदं सदा पश्यन्ति सूरयः'' इसका अर्थ यह हुआ कि परंपद जो है वह श्रीविष्णु भगवान का ही है। उस परंपद को वहाँ के रहने वाले जो नित्य सूरि लोग हैं वे ही देखते हैं। और भी उस परंधाम के बाबत अनेक उपनिषदों में अनेक वचन पाये जाते हैं। कौशीत की उपनिषद्, त्रिपाद्विभूति, महानारायणोपनिषद्, बृहद्ब्रह्म संहिता, पद्मपुराण, उत्तर खण्ड, बृहद्धरीत स्मृति आदि ग्रन्थों में उस दिव्य धाम के निर्णय के बाबत अनेक वचन मिलते हैं। नास्तिक लोग अपनी बेसमझी से भले ही चाहे जो कहा सुना करें, परन्तु ज्ञानी बड़े-बड़े आस्तिक महात्मा तो उसको भली भांति मानते ही हैं और उस दिव्यधाम के मिलने के लिये अनेक शास्त्रीय उपायों में निरत भी हैं। कहिए महात्मा लक्ष्मी प्रपन्नजी! आप तो कहते थे कि अदृष्ट परोक्ष में आँख से देखे बिना संशय रहित विश्वास कैसे कर सकते हैं। परन्तु परंपद को यहाँ वाले तो कोई नहीं देखे हैं और उसको मिलने के लिए लाखों आस्तिक लोग अनेक प्रकार के यत्न कर ही रहे हैं तो यदि देखी ही चीज पर विश्वास किया जाता और संशय छोड़ा जाता तो वह मुमुक्षु आस्तिक समाज दुनियाँ में कहाँ से दिखता। और यदि कहें कि उन लोगों को विश्वास नहीं है तो यह बात कह ही नहीं सकते क्योंकि विश्वास के बिना कोई परमार्थ पथ के साधन में अपना समय बिता नहीं सकता। इससे सच्चे मुमुक्षुओं को चाहिए कि परमात्मा के और परमात्मा के दिव्य धाम के और उन दोनों के मिलने के लिये शास्त्रों में जो उपाय वर्णन किये हैं उन उपायों के बाबत अपनी तरफ से तर्क-वितर्क, संशय-भ्रम कुछ न करके प्राचीन मुमुक्षुओं के समान शास्त्रों ही के वचन पर पूर्ण विश्वास करके उसमें निरत हो जायें।

श्रीमदनन्त श्रीजगद्गुरु भगवद्रामानुज संरक्षित विशिष्टाद्वैत सिद्धांत प्रवर्तकाचार्य श्रीश्री १००८ श्रीस्वामीजी सीतारामाचार्यजी महाराज कृत शरणागति मीमांसा पंचम खण्ड समाप्त।

क्रमशः

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी
मोबाइल - ९४०३७२७९२७

निहरिन्नि निन्नवेन् नीचतैक्कु, निन्नरुळिन्गणन्नि
प्पुहलोन्नु मिल्लै अरुट्कुमःदे पुहल्, पुन्मै यिलोर
पहरुम् पेरुमै यिरामानुज इनिनाम् पळुदे यहलुम्
पोरुळेन्, पय निरुवोमुक्कु मानपिन्ने ॥४८॥

महात्मस्तुत्यप्रभाव भगवन् रामानुज। निस्तुलस्य मदीयनैच्यस्य भवतः करुणैव शरणं नान्यत्किमपि। तस्याः करुणायाश्च तदेव मादृशां नैच्यं शरणं नान्यत्। एवमन्योंन्यमुभयोरपि लाभ इति स्थिते कथमावयोर्विश्लेषो युज्येत?॥ (तदहं त्वदृते न नाथवान् मदृते त्वं दयनीयवान्न च। विधिनिर्मितमेतदन्वयं भगवन्पालय मा स्म जीहपः। इति स्तोत्ररत्नपद्यच्छायया विज्ञापितमिदं पद्यमिति बोध्यम्॥

हे महात्माओं की स्तुति पाने योग्य वैभववाले श्रीरामानुज स्वामिन्। मेरी असदृश नीचता की शरण, आपकी कृपा के सिवा दूसरी कोई नहीं होगी; और आपकी उस कृपा की भी मेरी नीचता ही शरण है। इस प्रकार, जब यह अर्थ सिद्ध हुआ कि आपसे मेरा लाभ, और मेरे से आपका लाभ है, फिर, अब से हम दोनों क्योंकर व्यर्थ ही एक दूसरे को छोडेंगे? (इस गाथा का अर्थ स्तोत्ररत्न के ''तदहं त्वदृते न नाथवान् मदृते त्वं दयनीयवान्न च'' इत्यादि पद्य के अर्थ से मिलता जुलता है। परमदयालु आपके सिवा और कोई मुझ परमनीच का उद्धार नहीं कर सकता; अतः मुझे आपकी कृपा की आवश्यकता है। आपको भी मेरी आवश्यकता है; क्योंकि आप अपने दयागुण का उपयोग पापियों पर ही कर सकते हैं; जो पापी न हो, वह दया का पात्र न होगा; अतः आपको पापी की प्रतीक्षा करनी पड़ती है। अब इस विशाल पृथ्वीतल पर मेरे सदृश पापी दूसरा कोई भी नहीं मिलेगा। अर्थात् आप को अपनी कृपा का उपयोग करने के लिए मेरे सदृश दूसरा कोई योग्य मानव नहीं मिलेगा। अतः हम दोनों एक दूसरे को पाकर जब कृतकृत्य हो गये, फिर हमारा विश्लेष होना अशक्य है। अर्थात् मैं आपको छोडूंगा नहीं; आप भी मुझको मत छोडिये।)

क्रमशः

तिरुपति
श्री गोविंदराजस्वामी का
ज्येष्ठाभिषेक महोत्सव

तिरुमल नादनीराजन मंटप को
वेदी बनाकर 'सुंदर काण्ड' का पठन प्रारंभ किया।

तिरुमल धर्मगिरि वेदविज्ञान पीठं में ति.ति.दे. ने लोककल्याणार्थ,
महासुदर्शन सहित विश्वशांति महायज्ञ का आयोजन किया।

तिरुपति
श्री गोविंदराजस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

अप्पलायगुंटा
श्री प्रसन्नवेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

ति.ति.दे. के अतिरिक्त
कार्यनिर्वहणाधिकारी
श्री ए.वी.धर्मारेड्डीजी द्वारा
ति.ति.दे. के न्यासमंडली के
पदेनसदस्य के रूप में
नियुक्त (२७-०५-२०२०) आं.प्र. के
धर्मस्व शाखा के आयुक्त
श्री पी.अर्जुन राव, आई.ए.एस.,
को श्रीहरि का चित्रपट भेंट देना।

आंध्रप्रदेश सरकार ने
श्रीमती एस.भार्गवी, आई.ए.एस., को
ति.ति.दे. के नूतन
संयुक्त कार्यनिर्वहणाधिकारिणी
(विद्या तथा स्वास्थ्य शाखा)
के रूप में नियुक्त किया।
उनके द्वारा २०-०५-२०२० को
पदभार स्वीकृति का दृश्य।

जन्म नक्षत्र - स्वाति नक्षत्र, ज्येष्ठ मास

अवतार स्थल - श्रीविल्लिपुत्तूर

आचार्य - श्रीविष्वक्सेन

ग्रंथ रचना सूची - तिरुप्पल्लांडु, पेरियाळवार तिरुमोळि

पेरियवाच्चान पिल्लै श्रीपेरियाळवार के तिरुप्पल्लांडु व्याख्या की भूमिका में अत्यंत सुंदरता से उनका गुणगान करते है। पेरियवाच्चान पिल्लै यहाँ तादात्म्य रूप से स्थापित करते हैं कि बद्ध जीवात्माओं को इस भव सागर से उत्थान हेतु श्रीपेरियाळवार का अवतार हुआ। श्रीपेरियाळवार भगवान श्रीमन्नारायण के निर्हेतुक कृपा से सहज रूप में भगवान श्रीमन्नारायण के दास्य से अलंकृत है। कहते हैं कि आप श्रीमान चाहते थे कि आपका जीवन केवल भगवद्-कैंकर्य में ही होना चाहिये और इसी कारण आपने शास्त्रों का अध्ययन कर पता लगाया कि सर्वश्रेष्ठ कैंकर्य क्या है। यह (सर्वश्रेष्ठ कैंकर्य) आपने भगवान श्रीकृष्ण के अवतार से संबंधित लीला (कहते हैं कि कंस की सभा में प्रवेश करने से पहले श्रीकृष्ण भगवान मथुरा में प्रस्थान कर एक मालाकार के घर में ठहरे जहाँ उन्होंने अपने वस्त्र इत्यादि बदले। तत्पश्चात उन्होंने मालाकार से निवेदन किया कि उन्हें निर्मल नूतन माला भेंट के रूप में दें। मालाकार श्रीकृष्ण भगवान की सुंदरता से मुग्ध होकर अत्यंत प्रेमभावना से भगवान को माला दिया। भगवान ने हर्ष से माला को स्वीकार किया) को स्मरण कर यह प्रतिपादित किया कि फूलों की माला बनाना ही सर्वश्रेष्ठ कैंकर्य है। इस प्रकार अपने शेष काल पर्यंत तक वे भगवान के लिये स्वयं फूलों के बगीचे का निर्माण कर, फूलों के बीजों को बोकर, उसका संरक्षण कर, उत्पन्न फूलों से फूलों की माला बनाकर अत्यंत प्रेमभावना से श्रीविल्लिपुत्तूर भगवान को अर्पण करते रहे।

कहते हैं कि अन्य आळवारों और आप श्रीमान में आसमान और जमीन का अंतर है। अन्य आळवार अपनी इच्छाओं की पूर्ति की चाह रखते थे (भगवान की सेवा करना)। परंतु आप श्रीमान इनके उल्टे थे। आप श्रीमान तो केवल भगवान की इच्छाओं की परिपूर्णता की चाह रखते थे (यानी भव सागर में त्रस्त सभी जीवात्माये भगवद्-धाम जाकर नित्य कैंकर्य करना चाहे, यह उनके चाहना के विपरीत क्यों ना हो)। अन्य आळवार सोचते थे कि भगवान ही रक्षक है और इस कारण वे सभी संरक्षित है (यानी भगवान का धर्म है उनके शरणागत का संरक्षण करना) और इस प्रकार अपनी चिंता दूर करते थे। परंतु आप श्रीमान तो यह सोचते थे कि आप भगवान के संरक्षक है और भगवान की रक्षा, देखभाल इत्यादि करना आपका कर्तव्य है। यही बात श्रीपिल्लै लोकाचार्य और श्री वरवरमुनि जी ने अति सुंदरता से बताया है जिसका वर्णन अब आगे है।

आप श्रीमान की रचना 'तिरुप्पल्लांडु' भी अन्य दिव्यप्रबंधों की तुलना में पूर्वोक्त कारण से सर्वोत्तम माना जाता है और अत्यधिक रूप से इसी का गुणगान

पेरियाळवार

(श्रीविष्णुचित्त स्वामीजी)

श्री संजय टिब्रेवाल

मोबाइल - ९३३०८२४४०३

होता है। अन्य दिव्यप्रबंध हालांकि वेदांत, अनेकानेक तत्त्वविषयों को प्रतिपादित करते हैं, लेकिन इनकी गणना में आप श्रीमान का तिरुप्पल्लांडु केवल भगवान का मंगलाशासन करता है। अन्य प्रबंध बहुत बडे हैं, परंतु आपकी यह रचना बहुत छोटी, सरल और स्पष्ट है। कहते हैं कि आपने बारह पाशुरों में मूल सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है।

मंगलाशासन क्या है? मंगलाशासन माने किसी के सुख, शांति, संवृद्धि के लिये प्रार्थना करना। सभी आळवार भगवान के हित के बारे में नित्य सोचा करते थे। श्रीपिल्लै लोकाचार्य यह दर्शाते हैं कि पेरियाळवार का भगवान के प्रति लगाव अन्यों से अधिकाधिक था। यह पूर्व ही आप श्रीमान के अर्चावतारानुभव में बताया गया है।

अब हम देखेंगे कि श्रीवचनभूषण के २५५वाँ सूत्र कैसे आप श्रीमान और यतिराज जी के वैभव को दर्शाता है -

अन्य आचार्य/आळवारों की भांति, आप श्रीमान और श्रीभाष्यकार ने शास्त्रों के अर्थों का उपदेश देकर सभी जीवात्माओं को सुधारकर और इन सभी को भगवान के नित्य कैंकर्य में संलग्न किये। और इस प्रकार से आपने श्री भगवान के एकाकिपन को दूर किया क्योंकि भगवान अपने बेटों समान जीवात्माओं का नित्य हित चाहते हैं और सभी जीव उनका शरण पाकर उनका नित्य कैंकर्य करते हैं। अगर कोई भी जीव इस भवसागर में त्रस्त दिखाई पडता है तो भगवान एक दम से उदास और अप्रसन्न हो जाते हैं। जिस प्रकार एक पिता या माता को अपने स्वात्मज पर प्रेम भावना रहती (ज्योकि अगर उनके साथ उस वक्त नहीं है) है, उसी प्रकार की भावना भगवान में भी है। यहाँ शिक्षक-शिष्य का एकाकिपन और जीवों का उद्धार वास्तव में महत्त्वपूर्ण उद्देश्य नहीं अपितु भगवान की इच्छा की पूर्ति और जीवों का स्वभाविक रूप से कैंकर्य करना।

श्रीमणवाल महामुनि अपने उपदेश रत्नमाला में श्री पेरियाळवार के वैभव को क्रमानुसार पांच पाशुरों में वर्णन करते हैं जो इस प्रकार है -

पहला - सोलहवें पाशुर में, वह अपने हृदय से कहते हैं कि ज्येष्ठ मास का स्वाति नक्षत्र अत्यंत पावन और पवित्र है क्योंकि उसी दिन श्रीपेरियाळवार का आविर्भाव हुआ है जिन्होंने तिरुप्पल्लांडु का निर्माण किया। और यह पूरे विश्व के लिये शुभदायक कल्याणकारक और मंगलदायक प्रतीत हुआ है।

दूसरा - सत्रहवें पाशुर में कहते हैं, हे मेरे हृदय तुम सुनो! ऐसे महाजनों महाज्ञानियों का कोई बराबर नहीं जो श्री पेरियाळवार के तिरुनक्षत्र का नाम सुनकर हर्ष से प्रफुल्लित होते हों।

तीसरा - अठारहवें पाशुर में कहते हैं, भगवान का मंगलाशासन करने की उनकी इच्छा अन्य आळवारों की तुलना में सर्वश्रेष्ठ है। और भगवान के प्रति वात्सल्य भाव की वजह से आप सदैव के लिये पेरियाळवार के नाम से जाने गए।

चौथा - वरवरमुनि इस उन्नीसवें पाशुर में कहते हैं, अन्य दिव्य पाशुरों की तुलना में सर्वश्रेष्ठ और अग्रगण्य तिरुप्पल्लांडु है क्योंकि वह केवल भगवान के मंगलाशासन ही करता है। जिस प्रकार वेदों में प्रणव शब्द ओंकार है, उसी प्रकार द्रविड वेद का प्रारंभ तिरुप्पल्लांडु से होती है। हर एक आळवार द्वारा विरचित पाशुर दिव्य अनोखा और निष्कलंक है।

पांचवाँ - बीसवें पाशुर में वे अपने हृदय से कहते हैं- तुम वेद, वेदांगों, और अन्य प्रमाणों में ढूँढकर बतलावों कि क्या तिरुप्पल्लांडु से बढकर कोई प्रबंध है और क्या पेरियाळवार से सर्वश्रेष्ठ और अग्रगण्य अन्य आळवारों में कोई है? अर्थात् कोई नहीं। उनके जैसा कोई नहीं।

उनकी एक और विशेषता है कि वे साक्षात् परब्रह्म श्रीरंगनाथ जी के ससुर थे। अर्थात् अपनी गोद ली गई पुत्री श्री आंडाळ देवीजी को उन्हें समर्पित कर, उन दोनों का विवाह करवाया।

इस धारणा से अपने मन को एक चित्त करते हुए, उनके वैभवशाली चरित्र को आगे देखें।

पेरियाळवार श्रीविल्लिपुत्तूर में प्रकट हुए जहाँ कई सारे वेदों के तत्त्वज्ञ रहते थे। वे ज्येष्ठ मास के स्वाति नक्षत्र में प्रकट हुए और उनके माता-पिता ने उनका नाम विष्णुचित्त रखा। कहते हैं कि जैसे गरुड (जो वेदात्म से जाने जाते हैं -

यानी जिनका शरीर ही वेद है) सदैव अपने स्वामी श्रीमन्नारायण के दिव्यचरण को पकडे हुए रहकर परतत्व का प्रतिपादन करते हैं, ठीक उसी प्रकार पेरियाळवार ने परतत्व का निरूपण दिया (अर्थात् सकलगुणसंपन्न अखिल जगत के सृष्टि करता धरता भगवान श्रीमन्नारायण ही परतत्व हैं और यही वेदों में प्रतिपादित है)। इसी कारण उन्हे श्री गरुड का अंशावतार माना जाता है। हालांकि कहा जाता हैं कि हमारे आळवार ऐसे जीव हैं जो भगवान के निर्हेतुक कृपा से चुने गए हैं, जिन्होंने दिव्य व्यक्तित्व तत्पश्चात प्राप्त किया।

कहा जाता है कि जिस प्रकार भगवान की कृपा से भक्त प्रह्लाद जन्म से ही भगवद्-भक्ति से संपन्न थे, उसी प्रकार पेरियाळवार भी जन्म से श्रीवटपत्रशायि भगवान की असीम कृपा से संपन्न थे।

नम्माळवार कहते हैं- ''मंणणिन् भारम् णीकुतर्के वडमथुरैप्पिरंतान्'' अर्थात् - आदि पुरुष भगवान श्रीमन्नारायण माने श्रीकृष्ण भगवान धरती के बोझ को कम करने हेतु अवतरित हुए। महाभारत में भी कुछ इस प्रकार से कहा गया- वह नित्य भगवान श्रीकृष्ण के रूप में अवतार लेकर संत-साधु-योगियों इत्यादियों के संरक्षण, धर्म की स्थापना और दुष्टों का विनाश हेतु अपने धाम द्वारका में रहते हैं। ऐसे भगवान अत्यंत सुंदर श्री देवकी के गर्भ से जन्म लिये और उनका पालन-पोषण अत्यंत सुंदर सुशील यशोदा मैय्या ने किया। ऐसे सुंदर भगवान श्रीकृष्ण जो सदैव नित्यसूरियों के भव्य मालाओं से सुशोभित हैं, वे मालाकार (जो कंस के लिये सेवा करता था) के पास जाकर उनसे एक सुंदर माला भेंट के रूप में निवेदन करते हैं। स्वयं भगवान ने मुझसे मेरी माला का निवेदन किया यह सोचकर मालाकार अत्यंत प्रसन्नता से उन्हें ताजा और अत्योत्तम माला समर्पण करता है। यह वार्ता पुराणों, इतिहासों इत्यादि में देखकर, अचम्भित पेरियाळवार यह निर्धारण करते हैं कि- भगवान को अति प्रिय सेवा है - ''माला बनाकर उनको समर्पित करना।'' और इस प्रकार से एक चित्त पेरियाळवार ने इस सेवा को आरंभ किया और श्रीविल्लिपुत्तूर के श्रीवटपत्रशायि भगवान को मालायें समर्पित करने लगे।

उस समय पाण्ड्य राज्य का राजा श्रीवल्लभदेव (जिसने अपने दिव्य विजय मीन चिह्न को मेरु पर्वत पर स्थापित किया) अपने राज्य (दक्षिण मदुरै) का परिपालन अत्यंत धर्मबद्ध होकर कर रहा था। एक रात्रि को राजा ने सोचा राज्य में मेरा परिपालन किस प्रकार से हो रहा है यह मैं अपनी आखों से देखूँ। अतः वेष बदलकर वे अपने राज्य की नगरी में प्रवेश किया। इसी दौरान राजा गौर करते हैं कि एक ब्राह्मण किसी अन्य के घर के सामने बैठा हुआ था। उसके पास जाकर, राजा ने उस ब्राह्मण से पूछा - अरे ब्राह्मण! अपना परिचय दो। ब्राह्मण तुरंत बोला- हाल ही मैं गंगा के किनारे गंगा स्नान करके लौटा हूँ। यह सुनकर प्रसन्न राजा ने ब्राह्मण से पूछा-अरे ब्राह्मण! क्या तुम्हें कोई श्लोक पता है? अगर हो तो कृपया बताओ। तुरंत ब्राह्मण ने कहा-

वर्षार्थमस्तौ प्रयतेत मासान् निचार्थामरत्तम् द्विशम् यतेथ।
वार्द्दग्यहेतोर्वायास नवेण परत्र हेतोरिह जन्मनास्च।

अर्थात् - प्रत्येक मनुष्य बारिश के चार महीने निश्चिंत रहने के लिये आठ महीने निरंतर काम कहता है, रात्री में खुश होने के लिये दिन भर काम करता है, बुढापे में आराम दायक ज़िंदगी के लिए जवानी में घोर परिश्रम करता है, अतः इस प्रकार हम सभी को अगले अच्छे जन्म के लिये इस जन्म में निरंतर परिश्रम करना पडता है।

यह सुनकर राजा अपने भविष्य जन्म के बारे में सोचने लगा। अरे! इस जन्म में मैं तो राजा हूँ, मुझे सकल सम्पन्नों का सौभाग्य मिला है, कैसे आनंददायक सुख साधन है क्या ये सभी अगले जन्म में भी मुझे प्राप्त होंगे? अब मैं क्या करू। मैं अगले जन्म की तैय्यारी कैसे करूँ और इसका साधन क्या होगा? किसके शरणागत होना चाहिये? कौन परतत्व को दर्शाएगा? और परतत्व को किस माध्यम से प्राप्त कर सकेंगे? इस प्रकार से विचलित राजा ने अपने राज पण्डित श्रीशेल्वनम्बि से इसके बारे में पूछा। श्रीशेल्वनम्बि (जो भगवान श्रीमन्नारायण के प्रिय भक्त है) ने कहा- आप तुरन्त इस राज्य के सभी पण्डितों को बुलाये और वेदान्त दर्शन से इसका समाधान उनके माध्यम से करे। यह सुनकर प्रसन्न राजा ने (आपस्तम्भ सूत्र - ''धर्मज्ञानसमयः प्रमाणम् वेदास्च अर्थात् - वेदज्ञान के

कार्य ही प्राथमिक प्रमाण है और वेद द्वितीय प्रमाण है'' के अनुसार) तुरन्त पंडितों की गोष्ठि का आयोजन किया और कहा कि जो कोई भी परतत्व को दर्शायेगा उसे बहुमूल्य धनसम्पत्ति से भरा थैली इनाम के रूप में मिलेगा। इस थैली को उन्होंने अपने राज दरबार के छत से टंगा दिया। इस प्रकार राजा का आमन्त्रण पाकर सभी पंडित उनके राज दरबार में तत्त्वनिरूपण के लिये उपस्थित हुए।

वटपत्रशायि भगवान जीवों के उत्थापन के लिये, और अपना परतत्व निरूपण पेरियाळवार के द्वारा दर्शाने के लिये, भगवान स्वयं उनके स्वप्न में आकर कहा- तुम उस सभा में जाओ और मेरा परतत्वनिरूपण कर अपने ईनाम को जीत के लाओ। बाकि मैं सब संभालूंगा। आळवार यह सुनकर विनम्र होकर भगवान से कहते हैं- परतत्व का निरूपण वेद वेदान्तों से करना है। मैं तो मामूली सा ब्राह्मण मालाकार हूँ। मैं भला यह कार्य कैसे सिद्ध कर सकता हूँ? भगवान आग्रह करते हुए कहते हैं- आप भला इन सबकी चिंता ना करे। मैं ये सब संभालूंगा। क्योंकि मैं वेदों को प्रकट करता हूँ और उससे संबंधित अर्थ को भी यथा तथा दर्शाता हूँ। अतः आप निश्चिंत रहिये। भगवान का आश्वासन पाकर अगले ही दिन, ब्रह्म मुहूर्त में उठकर (शास्त्र कहता है- ब्राह्मे मुहुर्ते च उत्थाय) अपना नित्य नैमित्य कार्य संपूर्ण कर, मदुरै की सभा के लिये रवाना हुए।

सभा में प्रवेश करते ही राजा और ब्राह्मनोत्तम शेल्वनम्बि ने उनको प्रणाम करते हुए स्वागत किया और उन्हें बैठने के लिये एक सिंहासन भी दिया। सभा में उपस्थित स्थानीय पंडितों ने राजा को बताया- आप किन्हे बुलाकार ले आए। ये तो एक तुच्छ मालाकार है। इन्हें वेद वेदान्त का परिज्ञान नहीं है। परन्तु राजा और शेल्वनम्बि भली-भांती इनके कैंकर्य और वटपत्रशायि भगवान के प्रति उनके लगाव को जानते थे। इसीलिये उन्होंने उनको (पेरियाळवार को) परतत्व निरूपण देने का अवसर दिया। तदनंतर पेरियाळवार, भगवान की निर्हेतुक कृपा से प्राप्त दिव्य दृष्टि के आभास से वेद वेदान्त के सारतम ज्ञान को प्रस्तुत किया। जिस प्रकार श्री वाल्मीकी ऋषि ने भगवान ब्रह्म के कृपाकटाक्ष से महत्त्वपूर्ण तत्त्वों को समझा, जैसे प्रह्लादाळवान भगवान के पाञ्चजन्य शंख के स्पर्श से सर्वज्ञ हुए, ठीक उसी प्रकार भगवान की निर्हेतुक कृपा से आप समझे की शास्त्रों का सार भगवान श्रीमन्नारायण ही है। इसका प्रमाण तार्किक अनुक्रम में आगे देखेंगे।

समस्त शब्दः मूलत्वादक्षरयो स्वभावतः समस्त वाच्च
मूलत्वात् ब्रह्मणोपि स्वभावतः वाच्यवाचक
संभंधस्तयोरर्थात् प्रदीप्यते।।

सारे अक्षर 'अ' अक्षर के माध्यम से ही उत्पन्न हुए हैं, सारे अक्षरों के अर्थ ब्रह्म से ही उत्पन्न हैं। अतः 'अ' शब्द और ब्रह्म भिन्न नहीं है और उनका संबंध स्वभाविक है।

गीताचार्य श्रीकृष्ण भगवान कहते हैं- ''अक्षराणाम् अकारोऽस्मि'' अर्थात् मैं ही सारे अक्षरों के मूल 'अ' अक्षर हूँ।

कहा गया है- ''अकारो विष्णुवाचकम्'' अर्थात् 'अ' अक्षर स्वयं विष्णु यानी श्रीमन्नारायण ही है जो परमपुरुष और परमात्मा है।

तैत्तिरिय उपनिषद ऐसे परम पुरुष परमात्मा श्रीमन्नारायण के विशिष्ट गुणों को इस प्रकार दर्शाता है- *यता वा इमाणि भूतानि जायन्ते, येन जातानि जीवंति, यत्प्रयंति अभिसम्विचंति, तत् विज्ञस्व ब्रह्मेति।* अर्थात् - (वह) जिससे पूरा संसार और जीव की व्युत्पत्ति होती है, जिस पर पूरा विश्व निर्भर है, प्रलय में उसमें विलीन हो जाता है, जहाँ जीव मोक्ष को प्राप्त करते हैं, वह निश्चिंत रूप से ब्रह्म है। ऐसे परम पुरुष भगवान के तीन गुणों का प्रतिपादन हुआ है जो इस प्रकार है-

पहला - ''जगत कारणत्व'' - इस पूरे जगत का कारण है (वह)।

दूसरा - ''मुमुक्षु उपायस्त्व'' - मोक्ष की चाह रखने वालों के पूज्य देवता (वह)।

तीसरा - ''मोक्ष प्रदत्व'' - (जो) मोक्ष दे सकता है (वह)।

यह सारे लक्षण या गुण श्रीमन्नारायण में पूर्ण रूप में देख सकते हैं जैसे विष्णु पुराण में है।

विष्णु से ही जगत की व्युत्पत्ति होती है, प्रलय काल में फिर से उनमें ही लीन होता है, वही उसको संभालते हैं और

वही विनाश भी करते हैं और उन्हीं का शरीर ही यह पूरा जगत है।

जिस प्रकार एक माता/पिता अपनी संतान की अभिवृद्धि देखकर हर्षित होते हैं, उसी प्रकार परमपदनाथ भगवान श्रीमन्नारायण भी हर्षित होते हैं। तदनंतर स्वयं भगवान चक्र, गदा इत्यादि से सुशोभित श्रीगरुड पर अपनी धर्मपत्नी श्री लक्ष्मी मैय्याजी के समेत विराजमान होकर उनकी सवारी के बीचों बीच प्रकट हुए। इनका सम्मान करने अन्य देवी - देवता अपने-अपने परिवार सहित सभी भी प्रकट हुए। चक्र, गदा इत्यादि से सुशोभित भगवान को इस भौतिक जगत में देखकर अपने सवारी की चिंता ना करते हुए केवल भगवान की आनंद हेतु हाथी पर लटके हुए घंठा को निकालकर उन्होंने अहंकार रहित प्रेम और वात्सल्य भाव से घंठा बजाते हुए उनका मंगलाशासन किया। यही दिव्यानुभूति ही तिरुप्पल्लांडु से जानी जाती है।

अनुवादक टिप्पणी - भगवान सर्वज्ञ, सर्वशक्त, सर्वव्यापक सर्वश्रेष्ठ इत्यादि हैं। परंतु यहाँ आळवार वात्सल्य भाव की नदिया में बह गए। आळवार अपने शेषत्व को भूलकर, शेषी मानकर भगवान के बारे में सोचने लगे। वे सोचने लगे-अरे! ऐसे परमपुरुष जो निर्मल स्वभाव के हैं, जिनका शरीर पञ्च उपनिषद् तत्त्वों (आध्यात्मिक) का है, जो ब्रह्म शिव इत्यादि देवी देवताओं के लिये पहुँचने योग्य नहीं, जो नित्य सूरी का सहवास करता हो, वही अभी अपने नित्य धाम को छोडकर यहाँ मेरे समक्ष उपस्थित हुए हैं। शायद कुदृष्टि से इनको कोई हानी ना पहुँचे इसीलिये आळवार सबों (ऐश्वर्यार्थि - धन की इच्छा करने वाले, कैवल्यार्थि - जो आत्मानुभव की चाह रखता हो, भगवद् शरणार्थी - भगवान के शरण में रहकर उनकी नित्य सेवा करना) को आमन्त्रित कर उन सभी से निवेदन करते है आप सभी भी भगवान का मंगलाशासन करो। तदनंतर तुरंत उनका मंगलाशासन करते हैं।

इसके पश्चात् भगवान अंतर्धान होकर अपने निज धाम को लौट जाते हैं। तदनंतर, पेरियाळवार राजा को आशीर्वाद देते हैं और राजा उनका मान सम्मान अत्यंत वैभव से करता है। आळवार अपने निज स्थान श्रीविल्लिपुत्तूर पहुँचकर ईनाम का सारा धन अपने प्रिय भगवान को समर्पित कर देते हैं।

जैसे मनु स्मृति में,

त्रयैवाधन राजन् भार्य दासस्तथा सुतः।

यत्ते समदिगच्छन्ति यस्यैते तस्य तद्धनम्।।

अर्थात् - पत्नी, पुत्र, दास इन सभी के पास कुछ भी नहीं हो, उनकी कमाई उनके निज संबंधि उत्तराधिकारी को जायेंगे (पति, मालिक, पिता)।

उपरोक्त तथ्य के अनुसार, श्री पेरियाळवार ने अपने स्वामी वटपत्रशायि को आर्जित धन सौंप दिया। अपना कर्तव्य निभाकर अपने नित्य कैंकर्य - फूलों की माला बनाना और उसी को भगवान को समर्पित करना, फिर से करने लगे। अतः इस प्रकार मालाकार की सेवा का अत्यंत लाभ उठाकर स्वयं अति प्रसन्न उस मालाकार और भगवान श्रीकृष्ण का गुणगान करने लगे। श्रीकृष्ण भगवान के दिव्य चरित्र से अत्यंत लगाव होने के कारण, यशोदा मैय्या का भाव रूप धारण कर, भगवान के सौशील्य और सौलभ्य गुणों का रसास्वादन करते हुए वात्सल्यभाव के प्रवाह में उन्होंने दिव्यप्रबंध की रचना की जिसे हम सभी 'पेरियाळवार तिरुमोळि' के नाम से जानते हैं। सदैव श्रियःपति पर चिंतन करते हुए, उन्होंने हर एक शिष्य और उन पर आश्रित श्रेयोभिलाषियों और अन्यों सहित सबों को आशीर्वाद दिया।

श्री पेरियाळ्वार जी का तनियन -

मिथुने स्वातिजं विष्णो रथांशं धन्विनःपुरे।

प्रपध्ये श्वशुरं विष्णोविष्णुचित्तपुरश्शिखम्।।

गुरुमुखमनधीत्य प्राहवेदानशेषान्

नरपति परिक्लुप्तम् शुल्कमादातु कामः।

श्वशुरममर वन्द्यम् रन्गनाथस्य

साक्षात् द्विज कुल तिलकम् विष्णुचित्तम् नमामि।।

श्री प्रपन्नामृतम्

(१३वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

मोबाइल - ९९००९२६७७३

(गतांक से)

श्रीवरदराज भगवान द्वारा यतिराज श्रीरामानुजाचार्य का सम्मान -

श्रीरामानुजाचार्य पूर्वोक्त उपायों से पत्नी को अपने पितृगृह में भेजकर गृहादि का त्याग करके सन्यासाश्रम में प्रवेशार्थ त्रिदंड, कमंडलु, भगवा वस्त्र आदि को एकत्रित करके भगवान वरदराज की सन्निधि में पहुँचकर भगवान को साष्टांग प्रणिपात निवेदित किया। तदनंतर भगवान से सन्यास-ग्रहण की आज्ञा लेकर अनंतसरोवर के तट पर आये और वहाँ गुरुदेव श्रीयामुनाचार्यजी का ध्यान करते हुए सन्यास ग्रहण किया। उस समय प्रसन्न देवताओं ने श्रीरामानुजाचार्य पर पुष्पों की वर्षा के साथ दुंदुभिघोष किया। शीतल मन्द-सुगन्ध वायु बह चली। भगवान भास्कर से नवीन प्रभा प्रस्फुटित हुई। दिशाएँ स्वच्छ हो गयीं और भक्त लोग प्रसन्न हुए। श्रीरामानुजाचार्य के सन्यासाश्रम में प्रवेश करते ही निराश कलि पर्वत कंदराओं में अपना स्थान खोजने लगा कि कहीं पाप का विनाश न हो जाय। कमंडलु, दण्ड, भगवा वस्त्र एवं द्वादशोर्ध्व पुण्ड्रधारी श्रीरामानुजाचार्य सन्यास लेते समय नारायण मुनि की तरह सुशोभित हुए।

भगवान वरदराज ने श्रीकांचीपूर्ण स्वामीजी को आदेश दिया कि मेरे परिचारकों को तथा ध्वज-चामर सहित वैष्णव ब्राह्मणों को साथ लेकर पालकी में शठकोप को रखकर यतिश्रेष्ठ श्रीरामानुजाचार्य को ससम्मान मेरे यहाँ लाओ। भगवान की आज्ञा पाकर श्रीकांचीपूर्ण स्वामीजी यतिसार्वभौम श्रीरामानुजाचार्य के सन्निकट जाकर सन्यासाश्रम के सभी कृत्यों को संपादित करवाकर अनेक वेदान्तविद ब्राह्मणों के साथ ससम्मान श्रीरामानुजाचार्य को वरदराज भगवान की सेवा में लेकर चले। उस समय श्रीरामानुजाचार्य तथा श्रीकांचीपूर्ण स्वामीजी एक दूसरे को देखकर अत्यंत प्रसन्न हो रहे थे। तदनंतर अर्चकों द्वारा तीर्थ, शठकोपादि दिलवाकर श्रीकांचीपूर्ण स्वामीजी ने भगवान वरदराज के आज्ञानुसार सबको अथायोग्य कर्म में नियुक्त किया। ब्राह्मणों ने स्वस्तिवाचन किया तथा काहली आदि का तुमुलघोष हुआ। आगे श्रीशठकोप को करके श्रीकांचीपूर्ण स्वामीजी के साथ श्रीरामानुजाचार्य स्वामीजी ने भगवान वरदराज की वंदनार्चना की। भगवान वरदराज ने भी

अपने अर्चकों द्वारा श्रीरामानुजाचार्य पुरस्सर समस्त ब्राह्मणों को तीर्थ, तुलसी, प्रसाद वितरित करवाया। तदनन्तर उन्होंने श्रीरामानुजाचार्य को यतिराज की संज्ञा से अभिहित करके श्रीकांचीपूर्ण स्वामी को आज्ञापित किया कि यतिराज के लिए सुंदर मठ प्रदान करें। इसके बाद परिचारिकों के साथ श्रीकांचीपूर्णस्वामी ने श्रीरामानुजाचार्य को मठ में प्रवेश कराया। यतीन्द्र श्रीरामानुजाचार्य ने भी मठ पाकर शीघ्र ही समागत सभी सज्जनों का यथोचित सत्कार मान किया। इसके बाद सभी ब्राह्मण अपने-अपने गृह में चले गये। तदनंतर तरुण सूर्य के समान प्रभापूर्ण श्रीरामानुजाचार्य ने अपने कृपाकटाक्ष से ही तत्रस्थ सब लोगों को अपनी ओर आकृष्ट कर लिया।

इस तरह वैष्णवाग्रणी श्रीरामानुजाचार्यजी ने प्रतिकूलाचरणशील भार्या का परित्याग करके भगवदाज्ञा से अनंतसरोवर में स्नान करके सन्यास ग्रहण कर लिया।

श्रीरामानुजाचार्य का यह चरित्र सांसारिक बाधाओं एवं आसक्तियों को दूर करने वाला है। जो लोग इसका प्रेमपूर्वक श्रवण करते हैं वे निश्चय ही भगवान विष्णु के वैकुण्ठ धाम में देह त्याग करके जाते हैं। चूंकि श्रीरामानुजाचार्य का यह चरित्र ज्ञान, शुभ पवित्रता प्रदान करने वाला है तथा इसको सुनकर भवभ्रम में पड़ा हुआ प्राणी बिना प्रयास के ही श्रीविष्णु के लोक में चला जाता है। अतः नाथमुनि पुरस्सर कृपामात्रप्रसन्नाचार्य विरुदधारी यतीन्द्रचक्रचूड़ामणि श्रीरामानुजाचार्य को सभक्ति साष्टांग प्रणिपात निवेदन है।

।।श्रीप्रपन्नामृत का १३वाँ अध्याय पूर्ण हुआ।।

क्रमशः

तिरुमल में दर्शनीय क्षेत्र

स्वामिपुष्करिणी : मंदिर के निकट स्थित यह तालाब अतिपवित्र है। यात्री मंदिर में प्रवेश करने के पूर्व इसमें स्नान करते हैं। आत्मा व शरीर की शुद्धि के लिए यहाँ स्नान करना श्रेष्ठ है।

आकाश गंगा : मंदिर की उत्तरी दिशा में लगभग ३ कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

पापविनाशनम् : मंदिर की उत्तरी दिशा में ५ कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

वैकुंठ तीर्थ : मंदिर की ईशान दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

तुम्बुरु तीर्थ : मंदिर की उत्तरी दिशा में १६ कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

भूगर्भ तोरण (शिलातोरण) : यह अपूर्व भूगर्भ शिलातोरण मंदिर की उत्तरी दिशा में १ कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

ति.ति.दे. के बाग-बगीचे : देवस्थान के दिशा-निर्देश सुंदर व आकर्षक बगीचे लगे हुए हैं, जिनमें विशिष्ट पेड व पौधे मिलते हैं।

आस्थान मंडप (सदस हाल) : यहाँ धर्म प्रचार परिषद् के दिशा-निर्देश में धार्मिक कार्यक्रम चलाये जाते हैं। जैसे भाषण, संगीत-गोष्ठी, हरिकथा-गान एवं भजन।

श्री वेंकटेश्वर ध्यान ज्ञान मंदिर (एस.वी. म्यूजियम्) : इस कलात्मक सुंदर भवन में एक म्यूजियम्, ध्यान केंद्र तथा छायाचित्र-प्रदर्शिनी आयोजित है।

ध्यान केंद्र : तिरुमल के एस.वी. म्यूजियम् एवं वैभवोत्सव मंडप में स्थित ध्यान केंद्रों में भगवान पर ध्यान केंद्रित कर भक्त शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

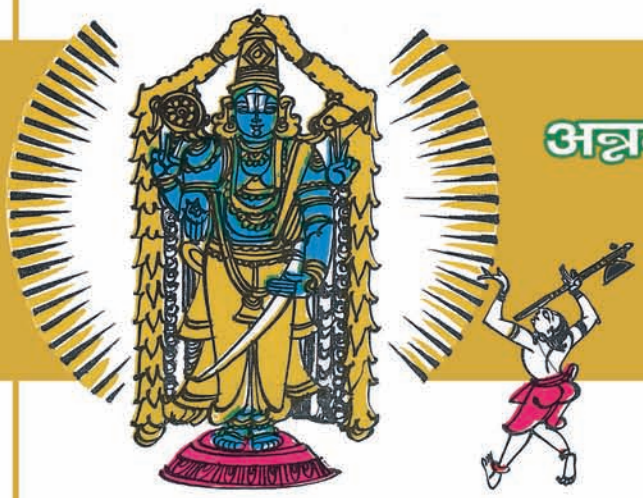

(गतांक से)

अन्नमय्या के जीवन का इतिहास

तेलुगु मूल - डॉ.एम.शिवप्रवीण

हिन्दी अनुवाद - श्रीमती पी.सुजाता
मोबाइल - ९४४१२५४०६१

''को नेटि रायडे...
... गोनुवाडे तिम्मप्पा

(- अन्नमाचार्य चरित्र, द्विपदा, पृ. १०९, ११०)

पोखर वाला, सात पहाड़ी, सूद-पैसेवाला, सोन-महलवाला, वरदान फेंकने वाला आदि नामों से किस्म-किस्मों से स्तुति करते, आगे बढ़ते हुए उस भक्तजन समूह के पीछे अन्नमय्या जाने लगा। उस भक्तजन बृन्द के साथ यात्रा करते-करते अन्नमय्या तिरुपति गंगम्मा का मंदिर पहुँच कर, उस ग्राम देवता को अनेक नमस्कार समर्पित किया। वहाँ से तिरुमल पहाड चढ़ते हुए नरसिंहस्वामीजी को, पगडंडी पर स्थित तलएरुगुंडु का संदर्शन किया। पवित्र, परम पावन, तिरुमलापहाड़ के नजारों को आँखभर संदर्शित करते हुए, पुलकित होते हुए, परवश होते हुए मोकाल्लपर्वत (घुटनेभर की ऊँचाई के सोपानों वाला पर्वत) पहुँचा। पैदा होने के बाद माँ को छोड बाहर कभी नहीं निकला भूखा रहते हुए सुदीर्घ यात्रा तय करते रहने के कारण खूब थका हुआ था। अतएव थके-माँदे एक पत्थर पर गहरी नींद में सो गया था।

पद्मावती देवी का कटाक्षः - अन्नमय्या की भूख और प्यास उस हिमवंत पर्वतराजा की पुत्री, जगत की माँ, राक्षसों के विरोधी देवताओं की माँ अलमेलुमंगा ने समझ कर लिया था, जिसकी सुध और दूसरे अर्थात् अन्नमय्या के सहयोग भक्तजनों ने नहीं जाना। अन्नमय्या की भूख की सुध लेते ही उस सर्व मंगल माँ पुण्य स्त्री का वेष धारण कर, उसके पास आयी। संसार में बेटे की भूख पहचानने की क्षमता केवल माँ ही को होती है न।

''तात! लगता है तू खूब थके हुए हो। होश-हवाश भी खोये हुए हो।'' माँ की बातों से अन्नमय्या प्रसन्न हुआ। माँ से उसने आशीर्वचन माँगा कि अपनी भूख-प्यास मिटे, थकावट दूर हो जावे और वह शीघ्रगति से उस तिरुवेंकटनाथ का दर्शन-भाग्य शीघ्र ही पावे।

अनवुड्ड कमला...
... काविंतु नेननुचु
(- अन्नमाचार्य चरित्रा, पृष्ठ - १५७)

''तात परम पावन, शालग्राममय इस तिरुमल दिव्य पर्वत पर पाद रक्षा को पहन कर चलने से तुझे मेरे स्वामी का संदर्शन मार्ग अवगत होता नहीं है। एक बार अपनी उन पाद-रक्षा को छोड कर तो देखो, तुम्हारे इर्द-गिर्द का परब्रह्म तत्त्व तुम्हें गोचरित होगा।'' उस कमल नयनी माँ ने उसे समझाया। माँ की बात न टालने वाले अन्नमय्या ने झट अपने पावों से जूते निकाल फेंक दिया। तब तक उसे पेड़-झाड़ और बाँबी की तरह सामान्य गोचर समस्त प्रकृति और सात पहाडों का दृश्य सर्व और समस्त विष्णुमय बन कर दिखाई देने लग गया।

अपने को ऐसे दृष्टि-पात का अनुग्रह करनेवाली जगन्माता को शिर झुका कर अभिवंदना की। उस माता ने पुत्र को अपने साथ लाये हुए परम पावन प्रसाद देकर, खाने को कहा। इस प्रसाद को खाने से अन्नमय्या का अंतरंग संतुष्ट हुआ। देवी जी से प्रसादित प्रसादान्न खाने के उपरांत अन्नमय्या को सारा मोकालपर्वत भगवन्मय होकर दिखाई देने लगा। अपने पर कृपा कर, कटाक्षित करने आयी उस माँ को अलमेलुमंगा समझकर, आशु-रूप से शतक पद्यों से वंदना-अर्चना की।

अम्मकु दाल्लपाका ....
.... नलमेलु मंगकुन्

तिरुमल संदर्शन : दोगुने उत्साह के साथ अन्नमय्या तिरुमलगिरि पहुँच गया। पहाड़ पर जाने के तुरंत बाद ही सर्व प्रथम कोनेटिराय (पुष्करिणीवाले) की पुष्करिणी पहुँच कर पवित्र स्नान किया। स्वामी की पुष्करिणी की सुंदरता के दर्शन किये अन्नमय्या का हृदय श्वेत पद्म की भांति विकसित हुआ। आनंद के उभरने से वराहस्वामी के आलय का संदर्शन किया। भूवराहस्वामी के संदर्शनानंतर भूलोक वैकुंठ बन कर, तिरुवेंकट के निलय होकर प्रवर्ध्दमान आलय के संदर्शनार्थ निकल पडा। आनंदनिलय के दर्शन के लिए प्रधान द्वार लाँघ कर, गरुड-स्तंभ को साष्टांग नमस्कार की। चाँदी का दरवाजा पार कर, प्रदक्षिणा मार्ग में आलय की प्रदक्षिणा किया। मंदिर के 'पोटु' (पाकशाला) से होते हुए घी के परिमल का आस्वादन करते हुए -

ऐ पोट्टु चूचिन .....
..... दासुलकेल्ला दाचिनट्लुंडेनु

इस तरह उस देवाधिदेव श्रीहरि के भक्ष्य-भोज्यों की स्तुति करते हुए, प्रदक्षिणा करते हुए, उस प्रदक्षिण मार्ग में योगनारसिंह, श्रीमद्रामानुजाचार्यजी का दर्शन करते हुए, देदीप्यमान ढंग से जगमगाते हुए आनंदनिलय को देखा तथा मनःपूर्वक आनंदित हुआ। वाहनमंडप में (प्रस्तुत परकामणि = हुंडी के द्रव्य गिनने का प्रांत) हुए श्रीस्वामी के ग्रामोत्सव के उपलक्ष्य में स्थित उच्छैश्रव (अश्ववाहन), गरुडवाहन, शेषवाहन का दर्शन कर ध्यानमग्न हो गया। नित्य कल्याण भूत उस श्रीनिवास के परिणय उत्सवों के निर्वहित पवित्र कल्याणोत्सव मंडप का दर्शन किया। श्रीहरि की हुँडी को दर्शित कर, जिसमें भक्तलोग भारी पैमाने पर उपहार समर्पित करते हैं, अपने उत्तरीय की छोर में बंधी हुई मोहर को स्वामी के लिए हुँडी में समर्पित किया।

श्रीवेंकटेश्वर का संदर्शन : सोने के कपाट के द्वारा मंदिर में प्रवेश कर, वहाँ -

ग्रक्कुन दग्गर.... कर पंकजंबु

दरवाजे से प्रस्फुटित दिखाई देनेवाली मूर्ति को, ऊपर के दो हाथों में शंख, चक्र धरे हुए को, नाभिप्रदेश पर एक बहुमूल्य माणिक्य से अलंकृत महापुरुष को, नंदकधारी को, मनोहर लघु घंटिकाओं को चरणों में अलंकृत वाले को, कटिवरदहस्त को, मणिमय कर्ण-आभरणों की कांतिवाले को, मंदस्मित वदन अरविंदवाले को, बहुमूल्य मोतियों के ऊर्ध्व पुंड्रों से सुशोभित मुर्ति को, देदीप्यमान रत्नकिरीटधारी को, श्रीवत्स नामक को, कौस्तुभ धारी को, दिव्यमंगल आकार वाले, श्रीनिवास को अन्नमय्या ने अपनी इच्छा पूर्ति होने तक दर्शित कर तर गया। स्तुति कर, कीर्त्तन किया। 'दरसा उस अखिलांड कर्ता को, गंभीर रूप को देखा, मेरे पापों को धुला पाया।' – ऐसा अपरिमित आनंदित हुआ।

पोडगंटिमय्या ..... श्रीनिवासुडा

कहकर प्रभु का स्तोत्र करते परवश हो गया।

क्रमशः

भगवान समदर्शी हैं

तेलुगु मूल - डॉ.वैष्णवाँघ्रि सेवक दास
हिन्दी अनुवाद - श्री अमोघ गौराँग दास
मोबाइल - ९८२१९१४६४२

राजा परीक्षित को एसा प्रतीत हुआ कि मानो परम भगवान ने इंद्र का पक्षपात करते हुए असुरों का वध कर दिया। तब परीक्षित ने शुकदेव गोस्वामी से पूछा कि भगवान नारायण वास्तव में पक्षपाती हैं या समदर्शी? भगवान आनंद का मूल श्रोत हैं फिर उन्हें देवताओं का पक्षपात करने से क्या प्राप्त होगा? उनके एसे कार्य का उद्देश्य क्या हो सकता है? जब वे त्रिगुणातीत हैं तो फिर उन्हें असुरों से डरने या उनसे वैर रखने की क्या आवश्यकता है? अपने इन सभी प्रश्नों का उचित उत्तर पाने के लिए राजा परीक्षित ने उन्हें शुकदेव गोस्वामी से पूछा। तब शुकदेव मुनि ने राजा को निम्न उत्तर दिया।

''हे राजा परीक्षित! पहले सुदर्शन चक्र द्वारा शिशुपाल का सिर काटे जाने पर उसे सायुज्य मुक्ति प्राप्त होने के समय राजा युधिष्ठिर ने एसा ही प्रश्न नारद मुनि से पूछा था। शिशुपाल को मिली सायुज्य मुक्ति ने युधिष्ठिर को आश्चर्यचकित कर दिया। युधिष्ठिर ने अनेकों ऋषियों की उपस्थिति में नारद मुनि से उस घटना के रहस्य को जानने की इच्छा प्रकट की।''

शिशुपाल भगवान कृष्ण से बहुत ईर्ष्या करता था। भगवान के प्रति इतना ईर्ष्यालु होने पर भी उसके द्वारा सायुज्य मुक्ति प्राप्त करना चौंका देने वाली बात थी। दमघोष का पुत्र शिशुपाल भगवान कृष्ण के प्रति अत्यंत कटु अपशब्द अपने बचपन से लेकर अंतिम साँस लेने तक बोलता रहा। उसके भाई दंतवक्र का स्वभाव भी बिलकुल वैसा ही था। भगवान के प्रति अपशब्द बोलते रहने के बाद भी शिशुपाल एवं दंतवक्र शारीरिक रूप से एकदम स्वस्थ थे। उन्हें कभी श्वेत कुष्ट-रोग नहीं हुआ। इतना ही नहीं भगवान कृष्ण द्वारा मारे जाने पर वे भगवान के ही शरीर में चले गये। इस सच्चाई को देखकर युधिष्ठिर दंग रह गये। तब नारद मुनि ने पाण्डुपुत्र के प्रश्न का उत्तर निम्न प्रकार दिया।

''हे राजन! निंदा, सम्मान, अस्वीकरण, सराहना आदि धारणाओं का मूल अज्ञान है। एक बद्ध-आत्मा का शरीर माया के माध्यम से कष्ट पाने के लिए होता है। देहात्म-बुद्धि के कारण बद्ध-आत्मा स्वयं को शरीर समझकर शरीर से संबंधित सभी चीजों को अपनी धरोहर मानता है। ईर्ष्यालु होने के कारण वह सराहना एवं दण्ड जैसे अनेक द्वन्द्वों का अनुभव करता है। लेकिन परमात्मा का कोई भी शत्रु या मित्र नहीं होता। परमात्मा असुरों को उनकी ही नित्य भलाई के लिए दण्डित करता है और वह स्तुति या निंदा दोनों से ही अप्रभावित रहता है। अतः शत्रुता, भक्ति, भय, मित्रता या काम में से किसी भी एक या एक से अधिक कारणों से परम पुरुषोत्तम भगवान पर ध्यान लगाने वाले सभी व्यक्तियों को अभिन्न लाभ की प्राप्ति होती है। भगवान सदैव आनंद की अवस्था में रहते हैं। इसलिए उन पर शत्रुता या मित्रता का कोई प्रभाव नहीं होता है। प्रिय युधिष्ठिर! वृंदावन की गोपियों ने काम के द्वारा, कंस ने भय के द्वारा, शिशुपाल ने ईर्ष्या के

द्वारा, यदुवंशियों ने पारिवारिक संबंधों के द्वारा, स्वयं तुमने मित्रता के द्वारा और हमने भक्तिमय सेवा के द्वारा भगवान कृष्ण की कृपा को प्राप्त किया है। राजा वेन जैसे कुछ अभागे व्यक्ति इन पाँच में से किसी भी एक तरह से भगवान कृष्ण का स्मरण न कर पाने के कारण अंतिम गंतव्यस्थल तक न पहुँच सके। अतः प्रत्येक व्यक्ति को मित्रता या शत्रुता के द्वारा भगवान कृष्ण का स्मरण अवश्य करना चाहिए। तुम्हारे चचेरे भाई शिशुपाल एवं दंतवक्र पहले से ही भगवान विष्णु के पार्षद थे। ब्राह्मणों के शाप के कारण उन्हें वैकुंठ से गिर कर इस भौतिक जगत में जन्म लेना पड़ा।''

''प्रिय राजा युधिष्ठिर! एक बार ब्रह्माजी के सनक आदि ब्रह्मचारी पुत्र अपनी दिव्य यात्रा करते हुए वैकुंठ लोक पहुँचे। यद्यपि आयु में वे मरीचि जैसे महान ऋषियों से भी बड़े थे किंतु अपनी योग शक्ति से वे केवल पाँच वर्ष के बालक दिखाई देते थे। वे पूर्णतया नग्न थे। वे वैकुंठ में प्रवेश करने का प्रयत्न किया। लेकिन जय एवं विजय नामक द्वारपालकों ने उन्हें रोक दिया। सनक आदि संतों को द्वारपालकों का व्यवहार अच्छा न लगा और उन्होंने द्वारपालकों को असुर बनने का शाप दे दिया। उस शाप के कारण जय एवं विजय भौतिक जगत में पतित होने वाले थे लेकिन उन संतों ने जय एवं विजय पर अत्यंत दया दिखाई। उस दया के प्रभाव से उन्हें बताया कि वे असुरों की तरह भौतिक जगत में तीन जन्म लेंगे और उसके बाद पुनः वैकुंठ में अपने स्थान पर आ जायेंगे। केवल तीन जन्मों के बाद वापस आने की बात जानकर जय और विजय बहुत प्रसन्न हुए।''

''हे राजन! भगवान विष्णु के इन पार्षदों ने पहले दिति के गर्भ से हिरण्यकश्यप एवं हिरण्याक्ष के रूप में जन्म लिया। भगवान हरि ने नृसिंह भगवान के रूप में प्रकट होकर हिरण्यकश्यप का वध कर दिया। भगवान वराह देव ने गर्भोदक सागर से पृथ्वी को मुक्त करते समय हिरण्याक्ष का वध किया। प्रह्लाद महराज हिरण्यकश्यप के पुत्र थे। भगवान द्वारा सुरक्षित होने के कारण प्रह्लाद को हिरण्यकश्यप मार नहीं सका। हे राजन! उन्हीं जय, विजय ने केशिनी के गर्भ से रावण और कुम्भकरण के रूप में जन्म लिया। वे दोनों सभी के दुःखों का कारण बन गये और भगवान रामचन्द्र द्वारा उनका वध हुआ। तब तीसरे जीवन में वे दोनों भगवान कृष्ण के संबंधियों की तरह जन्मे और सुदर्शन चक्र द्वारा मारे गये। भगवान कृष्ण द्वारा वध होने पर वे दोनों शाप से मुक्त होकर वैकुंठ में अपने मूल स्थान पर पहुँच गये।''

नारद मुनि के उत्तर से युधिष्ठिर के मन में एक और संदेह उत्पन्न हुआ। उन्होंने जानना चाहा कि हिरण्यकश्यप की अपने पुत्र से शत्रुता क्यों थी? वे यह भी जानना चाहते थे कि प्रह्लाद इतने महान भक्त कैसे बने? राजा युधिष्ठिर ने भक्त प्रह्लाद के बारे में और अधिक जानने की जिज्ञासा प्रकट की। उनके उत्साह को देखकर नारद मुनि ने भक्त प्रह्लाद पर प्रवचन दिया। इस प्रकार राजा युधिष्ठिर और नारद मुनि जैसे दो महान वैष्णवों के बीच भक्त प्रह्लाद की कथा का वाचन स्वयं भगवान श्रीकृष्ण की उपस्थिति में हुआ। इसीलिए भक्त प्रह्लाद की महान कथा का अत्यंत महत्वपूर्ण एवं विशेष स्थान है।

श्रीवराह रूप में भगवान विष्णु द्वारा हिरण्याक्ष के मारे जाने पर हिरण्यकश्यप बहुत क्रुध्द हुआ। उसने तुरन्त एक त्रिशूल लेकर समस्त असुर अनुयायियों को आदेश देते हुए कहा ''हे असुरों! मेरी बात ध्यान से सुनो। मेरे निर्देशों का दृढ़तापूर्वक पालन करो। सभी देवताओं ने मिलकर मेरे भाई का वध किया है। अतः तप, यज्ञ, वेद अध्ययन, व्रत, दान जैसे पवित्र कार्य करने वाले सभी व्यक्तियों का वध कर डालो। ब्राह्मणिक सस्कारों के न रहने पर सभी यज्ञ स्वतः बंद हो जायेंगे और इस प्रकार देवताओं की स्वाभाविक मृत्यु हो जायेगी।'' हिरण्यकश्यप के शब्दों ने असुरों को पूर्णतया उत्साहित कर दिया और वे पूरी शक्ति के साथ क्रियाशील हो गये। तब हिरण्यकश्यप के अनुयायियों के भय से सभी ने वैदिक सस्कारों को संपन्न करना बंद कर दिया। और सभी देवता यज्ञ फलों से वंचित हो गये। वे घोर चिंता में पड़कर पृथ्वी पर छिप कर रहने लगे। अपने सभी असुर सहायकों को आदेश देने के बाद हिरण्यकश्यप ने हिरण्याक्ष का अंतिम संस्कार किया। उसने अपनी माता एवं भाभी को सांत्वना भी दी। हिरण्यकश्यप के सांत्वना भरे तात्विक शब्दों को सुनकर उसकी माता दिति एवं अन्य संबंधियों ने शोक को त्याग दिया।

(गतांक से)

श्री मधुरकवि स्वामीजी

श्रीमती सरोज. भट्टड
मोबाइल - ९११३५८७४६९

सामवेद के पण्डित और पूर्व शिखा ब्राह्मण के परिवार में इनका जन्म हुआ। उचित समय में उनके जात कर्म, नाम कर्म, अन्न-प्रासन, चौळा, उपनयनम इत्यादि कार्य संपन्न हुए और उन्होंने वेद, वेदान्त, पुराण, इतिहास इत्यादि का अध्ययन भी किया। भगवान को छोडकर अन्य विषयों से वे विरक्त थे और उत्तर भारत के कुछ दिव्य क्षेत्र जैसे अयोध्या, मथुरा इत्यादि की यात्रा पर निकले।

मधुरकवि आळवार के पश्चात् अवतार लेने वाले नम्माळवार को किसी विषय में रुचि नहीं थी। यहाँ तक कि माता के दूध में भी नहीं और वे बिना कुछ कहे बगैर संसार में रह रहे थे। इनके माता-पिता कारी और उदयनंगै, उनके जन्म के १२ दिन बाद, शिशु के इस प्रकार के लक्षण से उद्विग्न थे, और उन्हें पोलिन्द निग्र पिरान एम्पेरुमान् के समक्ष प्रस्तुत किया। यह एम्पेरुमान ताम्रपर्णी नदी के दक्षिण में स्थित एक सुन्दर मंदिर में, शंख और चक्र आयुधों से अलंकृत, पद्म के समान सुन्दर नेत्रों से, अभय हस्त प्रदान करते हुए (एक हाथ की मुद्रा जिससे भगवान अभय प्रदान कर रहे है कि वे अवश्य हमारा रक्षण करेंगे) और अपनी दिव्य महिषी-श्रीदेवी, भूदेवी, नीला देवी के साथ विराजमान हैं। भगवान के समक्ष, उनके माता-पिता उनका ''मारण'' (अर्थात् जो सबसे अलग है) कहकर नामकरण करते हैं और उन्हें दिव्य इमली के वृक्ष के नीचे रख, उन्हें दिव्य व्यक्तित्व मानकर आराधना करते है। परमपदनाथ भगवान तब श्रीविष्वक्सेनजी से उन्हें पञ्चसंस्कार करके उन्हें द्राविड़ वेद (नायनार अपनी रचना आचार्य हृदय में बताते हैं कि द्राविड़ वेद सनातन है) और सभी रहस्य मंत्र और मंत्रार्थ की शिक्षा प्रदान करने का आदेश देते हैं और श्री विष्वक्सेनजी भगवान के निर्देश का पालन करते हैं।

तिरुप्पुलि आळवार के नीचे (दिव्य इमली के पेड़) नम्माळवार १६ साल बिताते हैं। इनकी महानता को इनके माता-पिता समझ चुके थे लेकिन किसी से भी बात नहीं कर रहें थे क्योंकि आळवार की उत्कर्षता सभी जन नहीं पा सकते थे और वे तिरुक्कुरुंगुडि नंबि एम्पेरुमान की ही निरंतर प्रार्थना कर रहे थे। इस विषय के बारे में मधुरकवि आळवार भी सुन चुके थे और एक दिन रात में नदी के तट जा पहुँचते हैं और उन्हें दक्षिण की ओर से एक उज्वल प्रकाश दिखायी देता है। वे सोच बैठते हैं कि वह प्रकाश किसी गाँव से या जँगल के आग से उत्पन्न हुई होगी। लेकिन, लगातार उसी प्रकाश २-३ दिन दिखने लगी। वे ठान लेते हैं कि उसके बारे में जानेंगे और सुबह सोके उस दिन रात को उस प्रकाश का पीछा करते हैं। मार्ग में कई दिव्य देशों की यात्रा करते हुए श्रीरंगम् पहुँचते हैं। दक्षिण दिशा से वह प्रकाश उन्हें और भी दिखाई दे रहा था और अपनी खोज जारी रखते हुए अंत में तिरुक्कुरुगूर (आळवार तिरुनगरी) पहुँचते हैं। वहाँ पहुँचने के बाद, रोशनी नहीं दिख रही थी और वे निश्चित करते हैं की प्रकाश उधर से ही उत्पन्न हो रहा है। वे मंदिर प्रवेश करते हैं और तिरुप्पुलिआळवार के नीचे निश्चल और परिपूर्ण ज्ञान युक्त, सुंदर से आँखों वाले, केवल १६ वर्ष के बालक, पूर्णिमा के चन्द्रमा की भांति प्रकाशित, पद्मासन में आसीन, एम्पेरुमान के बारे में अनुदेश देते हुए उपदेश मुद्रा में विराजमान और प्रपन्न जन के आचार्य नम्माळवार को पाते हैं। भगवत अनुभव में डुबे हुए उन्हें देखकर, वे एक छोटा-सा पत्थर उनकी ओर फेंकते हैं। आळवार अति सुन्दर तरह से जाग जाते हैं और मधुरकवि आळवार को देखते हैं। उन्होंने उनकी बोलने की शक्ति को परखना चाहा और उनसे ''सत्ततिन् वैतिल् सिरियदु पिरंदाल् एत्तैतिनू

एन्गे किडक्कुम्'' करके प्रश्न पूछा मतलब जब एक चेतन आत्म (संवेदन शील-जीवात्म) अचेतन वस्तु (असंवेद्य) में प्रवेश करता है, तो वह जीवात्मा कहाँ रहता है और किसका आनंद लेता है। आळवार उत्तर देते हैं ''अत्तैतिनृ अंगे किडक्कुम्'' जिसका अर्थ है भौतिक और संसारिक सुख-दुःख को अनुभव करते हुए उस असंवेद्य वस्तु में नित्य स्थिरता प्राप्त करता है। यह सुनने के बाद मधुरकवि आळवार जान लेते हैं कि वे सर्वज्ञ हैं और इनकी शुश्रूषा करके उन्नति पानी चाहिए। यह सोचकर वे नम्माळवार के श्रीपाद पद्मों का आश्रय पा लेते हैं। उस समय से वे आळवार के साथ निरंतर उनकी सेवा करते हुए और उनकी कीर्ति गान करते बिता देते हैं।

तत्पश्चात्, श्रीवैकुंठ नाथ (परमपदनाथ) को जो सभी बीजों के बीज हैं, जो सबके मालिक हैं, जो सबके नियंत्रक हैं, जो चेतन और अचेतन वस्तुओं में परमात्म बनकर स्थित हैं, जिनका शरीर (तिरुमेनि) काला / नील रंग का हैं, आळवार से मिलना की अभिलाषा हुई। पेरिय तिरुवडि (गरुडाळवार) तुरंत एम्पेरुमान के सामने हाज़र होते हैं और एम्पेरुमान श्रीमहालक्ष्मी के साथ उन पर आसीन हो जाते हैं और तिरुक्कुरुगूर पहुँच कर आळवार को अपना दिव्य दर्शन प्रदान करके, उन्हें दिव्य ज्ञान से अनुग्रहीत करते हैं। एम्पेरुमान के अनुग्रह प्राप्त होने के कारण नम्माळवार भगवत अनुभव में डूब जाते हैं और उस अनुभव आनंद की सीमायें पार करके तिरुविरुत्तम्, तिरुवासीरियम्, पेरिय तिरुवंदादि और तिरुवायमोळि (चार वेदों का सार) के दिव्य पाशुरों के रूप में एम्पेरुमान का दिव्य स्वरूप, दिव्य आकृति और दिव्य गुणों का कीर्तन करते हैं। नम्माळवार इसे मधुरकवि आळवार और उनके आश्रित लोगों को शिक्षा देते हैं। नम्माळवार को आशीर्वाद देकर उनसे मंगलाशासन पाकर अपने आप का पोषण करने के लिए सभी दिव्यदेश के एम्पेरुमान तिरुप्पुळिआळवार के सामने आते हैं। नम्माळवार हम सभी को उनकी तरह बनने और उन्हीं के जैसे एम्पेरुमान के

प्रति प्रेम होने का आशीर्वाद करते हैं। परमपद से नित्य सूरी और क्षीर समुद्र से श्वेत दीप वासी नम्माळवार का कीर्तन करने के लिए आते हैं। और उन्हें देखे आळवार उनका मंगलाशासन करते हैं। नित्य सूरी और श्वेत दीप वासी वहाँ आकर उनकी स्तुति करने से नम्माळवार प्रसन्न हो जाते हैं और ऐलान करते हैं कि ब्रह्माण्ड में इनसे बढ़कर कोई नहीं हैं (एम्पेरुमान के दिव्य अनुग्रह से उत्पन्न हुआ सात्विक अहंकार), वे सीमा रहित कीर्ति से जीवन बितायेंगे और हमेशा कण्णन् एम्पेरुमान (कृष्ण) के प्रति ध्यान करते हुए खुद को बनाये रखेंगे। वे अर्थ-पंचक का ज्ञान (पाँच तत्त्वों का ज्ञान- परमात्मा स्वरूप, जीवात्म स्वरूप, उपाय स्वरूप, उपेय स्वरूप और विरोधि स्वरूप) और एम्पेरुमान के भक्तों का दिव्य मधु तिरुवायमोळि द्वारा द्वय महा मंत्र का अर्थ पूरी तरह से प्रकाशित करते हैं। ३२ वर्ष की उम्र में इस सँसार को छोड़ कर एम्पेरुमान दिव्य मनोरथ से परमपद पहुँचते हैं।

नम्माळवार (जो प्रपन्न जन कूटस्थर - प्रपन्न कुल नायक मूलपुरुष) के प्रधान शिष्य मधुरकवि आळवार अपने आचार्य की स्तुति करते हुए 'कण्णिनुण् शिरुताम्बु' की रचना करके पञ्चोपाय निष्ठा का पालन (पाँचवा उपाय - आचार्य निष्ठ और कर्म, ज्ञान भक्ति और प्रपत्ति बाकी चार उपाय हैं) करने वाले मुमुक्षुओं को प्रदान करते हैं। आळवार तिरुनगरि में नम्माळवार की अर्चा मूर्ति की स्थापना करके, नित्य (प्रति दिन), पक्ष, मास, अयन (अर्धवार्षिक), संवत्सर (सालाना) भव्य उत्सव आयोजन करके खुद भी भाग लेते हैं। वे नम्माळवार को ''वेदम् तमिळ सेयद पेरुमाळ वन्दार, तिरुवायमोळि पेरुमाळ वंदार, तिरुनगरि पेरुमाळ वंदार, तिरुवळुतिवळणाडर् वंदार, तिरुक्कुरुगूर नगर नंबि वंदार, कारिमारर् वंदार, शटगोपर

वंदार, परांकुशर वंदार'' कह कर स्तुति करते हैं जिसका अर्थ हैं वेद सार देने वाले पेरुमाळ पधारे हैं, तिरुवाय्मोळि के महान कवि आये हैं, तिरुनगरि के नायक आये हैं, आळवार तिरुनगरि के आस-पास (तिरुवळुतिवळणाडर) रहने वाले आये हैं, अतिमानुष गुणों से पूर्ण तिरुक्कुरुगूर नगर में निवास करने वाले आये हैं, कारी के पुत्र आये हैं, शटगोपर आये हैं और सभी प्रत्यर्थ को अंकुश लगाने वाले पधारे हैं। उस समय मधुरै (दक्षिण) तमिळ संघ से तमिळ पंडित आते हैं और इनकी यह प्रशंसनीय शब्दों को टोक देते हैं और कहते हैं कि जब तक नम्माळवार की महानता साबित न हो जाए, जब तब संघ पीठं (साहित्य की परख करने के लिए उपयोग किया जाने वाला एक दिव्य फलक पीठं) उनकी साहित्य को स्वीकारता नहीं, वे नहीं मानेंगे कि नम्माळवार ने अपने साहित्य में वेद के सार को प्रस्तुत किया है। मधुरकवि आळवार कहते हैं कि नम्माळवार कहीं भी नहीं आयेंगे और एक खजूर भोज के पते नम्माळवार के तिरुवाय्मोळि (१०.५.१) पाशुर का प्रथम दो शब्द ''कण्णन् कळळिनै'' लिखकर तमिल संघ से आये उन कवियों को सौंप देते हैं। कहते हैं कि अगर संघ पीठं आळवार के इन दो शब्दों को स्वीकारता है तो नम्माळवार की महानत साबित हो जाएगी। मधुरकवि आळवार के वचन को कवि जन मान लेते हैं और मधुरै लौटकर तमिल संघ के उनके नेता को घटित घटना के बारे में बताते हैं। नेता मानकर संघ पीठं पर उन दिनों के ३०० अन्य महान कवि की कविताओं के साथ खजूर भोज के पत्ते पर आळवार से लिखे गए शब्दों को रखते हैं। उस जादुई फलक नम्माळवार की महानता को स्पष्ट करने के लिए केवल आळवार के शब्दों को स्वीकार करके बाकी रचनाओं को ठुकरा देती हैं। संग के नेता तुरंत नम्माळवार के प्रति एक कविता लिखते हैं जो इस प्रकार हैं :

इयाडुवतो गरुडर्केतिरे
इरविक्केति र्मिमिनियाडुवतो
नायोडुवतो उरुमिप्पलिमुन्
नरिकेशरी मुन्नडैयाडुवतो
पेयडुवतो एळिळ्उर्वचिमुन्
पेरुमानडि शेर वकुलाभरणन्
ओरायिरमामरैयिन् तमिळिळ्
ओरु षोल पोरुमो उलकिल् कवियै

संसारिक जीवन बिताने वाले कवियों की अनगिनित कविताओं की नम्माळवार (जो श्रीमन्नारायण के शरणागत और वेद सार अपने १००० से अधिक पाशुरों में दिये हैं) के एक शब्द से भी तुलना नहीं कर सकते।

१) जैसे गरुड़ की उड़ान कौशल की मक्खी के साथ तुलना नहीं कर सकते।

२) जैसे सूरज की चमक की जुगनू के साथ तुलना नहीं कर सकते।

३) जैसे बाघ के गर्जन की कुत्ते की भौंकने से तुलना नहीं कर सकते।

४) सिंह के राजसी चाल की लोमड़ी की साधारण चाल से तुलना नहीं कर सकते।

५) ऊर्वशी (देव लोक की नर्तकि) के सुंदर नृत्य की शैतान के नाच से तुलना नहीं कर सकते।

यह देखकर, सभी कवि नम्माळवार के गुण गान आरंभ करके उनसे क्षमा प्रार्थना करते हैं। इस तरह मधुर कवि आळवार ने ''गुरुम प्रकरशयेत् धीमान्'' (आचार्य की स्तुति निरंतर करनी चाहिए) के अनुसार अपना समय आचार्य की स्तुति करने में बिताया और उनकी प्रभुता का विस्तार किया। सभी का अपने उपदेशों से सुधार किया। कुछ ही समय के बाद संसार छोड़कर नम्माळवार को नित्य कैंकर्य करने के लिए आचार्य तिरुवडि (श्रीपाद पद्म) पहुँच जाते हैं।

तनियन :

अविदित विषयांतर शठारे उपनिशदाम् उपगाना मात्र भोगः।
अपि च गुण वशात् तदैक शेषि मधुर कविर् हृदये ममा विरस्तु।।

समाप्त

युवता

भगवद्गीता और नौजवान

आसुरी गुण ही बंधन का कारण है

तेलुगु मूल - डॉ.वैष्णवाँघ्रि सेवक दास

हिन्दी अनुवाद - श्री अमोघ गौराँग दास

मोबाइल - ९८२१९१४६४२

तत्ववादी प्रायः बंधन एवं मोक्ष नामक दो शब्दों का प्रयोग करते हैं। भौतिक जगत में बंधन एवं मोक्ष की स्थितियाँ सदैव देखी जाती हैं किंतु कोई भी उन पर ध्यान नहीं देता है। वास्तव में बंधन एवं मोक्ष किसे कहते हैं? चोरी, हत्या या धोकेबाजी जैसे अपराधों के लिए पुलिस अपराधियों को बंदी बनाती है। पुलिस अपराधियों को हथकडी से बाँधकर न्यायाधीश के सामने प्रस्तुत करती है और अंत में न्यायाधीश के निर्णय के अनुसार उन्हें कारागार में डाल देती है। बंधन शब्द के बोध के लिए ये उचित उदाहरण है। अर्थात् एक बंधे हुए व्यक्ति किसी सामान्य व्यक्ति की तरह स्वतंत्रता का आनंद नहीं ले सकता है, पारिवारिक सांगत्य का आनंद नहीं ले सकता है और यहाँ तक कि भली प्रकार सो भी नहीं सकता है। यह बंधन के दुष्परिणाम हैं। चलो अब मोक्ष के बारे में जानकारी लेते हैं। वर्तमान समय में संपूर्ण विश्व कोविड-१९ नामक विषाणु के प्रकोप से संघर्ष करके सामान्य अवस्था को प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा है। इस विषाणु से संक्रमित व्यक्ति को उपचार के लिए अस्पताल भेज दिया जाता है। भगवान बालाजी की दया से विश्व के अन्य देशों की तुलना में भारत में इस रोग से निरोगित व्यक्तियों की संख्या अधिक एवं

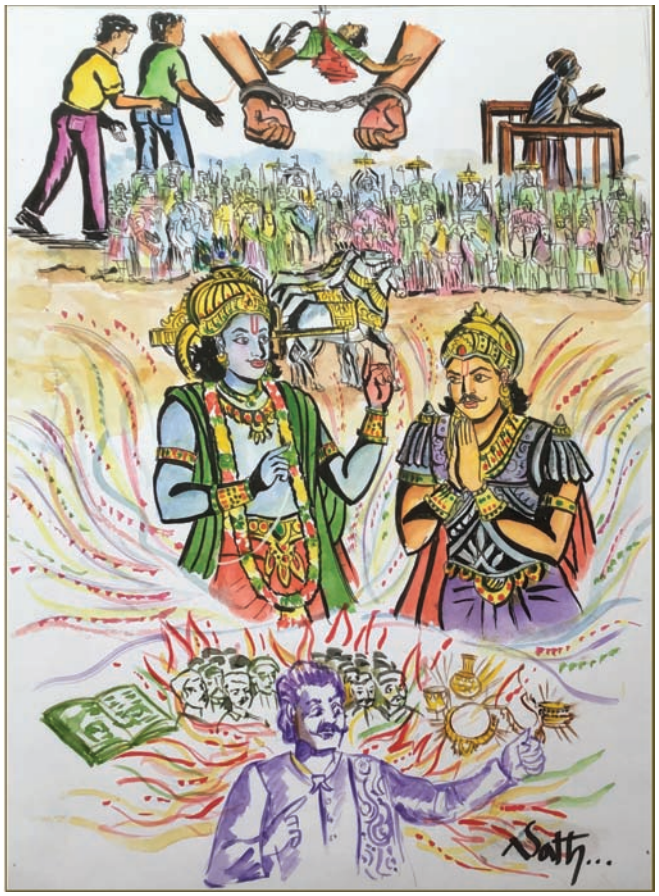

मृत्यु दर बहुत कम है। संयमित आहार लेने के साथ डाक्टर के निर्देशों एवं अन्य नियमों का पालन करने वाले रोगी रोगमुक्त हो रहे हैं। अर्थात् उन्हें रोग के बंधन से मुक्ति (मोक्ष) मिल जाती है।

इस प्रकार बंधन एवं मोक्ष का अर्थ समझने के पश्चात् चलो अब जानते हैं कि इसका हमारे जीवन से क्या संबंध है? भगवद्गीता के सोलहवें अध्याय में इस विषय पर विशेष टिप्पणी की गई है। भगवान कृष्ण ने बताया कि आसुरी गुणों के कारण ही बंधन उत्पन्न होता है। अर्थात् आसुरी गुण, बंधनों का कारण है और वही आगे चलकर कष्टों का कारण बनते हैं। इसे बहुत गंभीरता से समझना चाहिए। लेकिन वास्तव में आसुरी गुण क्या हैं? भगवद्गीता (१६.४) में इस प्रश्न का उत्तर निम्न प्रकार से दिया गया है :

''हे प्रथापुत्र! दंभ, दर्प, अभिमान, क्रोध, कठोरता तथा अज्ञान - ये आसुरी स्वभाव वालों के गुण हैं।''

''दिव्य गुण मोक्ष के लिए अनुकूल हैं और आसुरी गुण बंधन दिलाने के लिए हैं। हे पांडुपुत्र! तुम चिंता मत करो, क्योंकि तुम दैवी गुणों से युक्त होकर जन्मे हो।'' (भगवद्गीता १६.५)

आसुरी गुण नरक की ओर ले जाते हैं। आसुरी व्यक्तियों को ऐसी नारकीय दशा का अनुभव इस जीवन में ही हो जाता है और अंततः वे नरक में गिर जाते हैं। अच्छी शिक्षा, धन की प्राप्ति, सुंदरता, ख्याति, ऊँचे पद एवं शक्ति प्रायः लोगों को घमण्डी बनाते हैं। यदि इन महान उपलब्धियों के प्राप्त होने पर भी कोई विनम्र रहता है तो समझना चाहिए कि उस पर भगवान की विशेष कृपा है। घमंडी होने के कारण लोग अविनयपूर्ण स्वभाव के हो जाते हैं। हठी स्वभाव प्रायः बड़ों, योग्य एवं वरिष्ठ व्यक्तियों की अवहेलना के रूप में प्रकट होता है। असंयमित स्वभाव वाला व्यक्ति हठी कहलाता है। ऐसे व्यक्तियों का विरोध करने या उनका सम्मान न करने पर उन्हें ठेस पहुँचती है और अपना गुमान दिखाते हुए वे क्रुद्ध हो जाते हैं। क्रोध के वश में वे अन्यों के साथ कठोरतापूर्ण दुर्व्यवहार करते हैं। अंततः ये सभी एक व्यक्ति को पूर्ण अज्ञान की ओर ले जाकर उसके दुःख एवं बंधन का कारण बनते हैं। ऐसा व्यक्ति निश्चित रूप से नरक में गिर जाता है।

अतः नौजवानों को आसुरी गुणों से मुक्त रखना चाहिए। उन्हें महान सफलता की प्राप्ति होने पर भी विनम्र रहकर सहायता करने वाले अपने सभी शुभचिंतकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करनी चाहिए। उन्हें अपनी सफलता पर कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए। ऐसे विनम्रपूर्ण स्वभाव के होने पर और अधिक सफलता की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति कभी हठी एवं कठोर स्वभाव वाले नहीं होते हैं। उच्च श्रेणी प्राप्त करने वाले विनम्र स्वभाव के विद्यार्थी की सराहना संपूर्ण विश्व में होती है। क्रोध का कोई लाभ नहीं है। वास्तव में क्रोध से सारा खेल बिगड़ जाता है और स्थिति प्रतिकूल हो जाती है। इससे अच्छे संबंध नष्ट हो जाते हैं। विनम्रता पूर्वक बात करने वाले व्यक्ति को सभी जगह सम्मान प्राप्त होता है। आसुरी गुणों से मुक्त होने वाला व्यक्ति स्थिर रूप से निरंतर विजय के मार्ग पर अग्रसर होता है। संपूर्ण विश्व में स्वागत एवं सराहना के योग्य बनने के हेतु युवा पीढ़ी के लिए यह सर्वोच्च मार्ग है। लेकिन पूर्व-वर्णित आसुरी गुणों को न त्यागने वाले व्यक्ति को बंधन, कष्ट एवं अंत में नरक का सामना करना पड़ेगा।

श्री वेंकटेश्वर परब्रह्मणे नमः

हिन्दू होने के नाते गर्व कीजिए!

* ललाट पर अपने इच्छानुसार (चंदन, भस्म, नामम्, कुंकुम) तिलक का धारण करें।
* नहाने के बाद निम्न भगवन्नामों में से किसी एक का एक पर्याय में १०८ बार जप करें।

श्री वेंकटेशाय नमः।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो नारायणाय।

हृषिकेश - एक प्रमुख देवभूमि

तेलुगु मूल - डॉ.एस.वेंकट कुमार
हिन्दी अनुवाद - श्रीमती टी.त्रिवेणी
मोबाइल - ९३००५८९५९१

उत्तराखंड राज्य, देहरादून जिले के विख्यात पुण्य स्थल है हृषिकेश। काल के अनुसार हृषिकेश-ऋषिकेश का नाम ले लिया। इसी को 'देवभूमि' के नाम से बुलाया जाता है। पवित्र गंगा नदी के किनारे पर स्थित यह पुण्य क्षेत्र हिन्दुओं के लिए परम पवित्र है। यह हिमालय श्रेणियों के नीचे के भाग में है। पौराणिक कथा के अनुसार- श्रीराम ने रावण संहार के बाद ब्रह्महत्या पाप के निवारण करने के लिए इधर आकर प्रायश्चित कर्माचरण किया। लोगों ने बताया कि श्रीराम ने इधर आकर तपस्या की। ऋषिकेश हरिद्वार से २५ किलोमीटर की दूरी पर है। ऋषिकेश से होकर ही पवित्र गंगा नदी बहती है। गंगा नदी हिमालय के शिवालिक पहाड़ों को पार कर उत्तर भारत के मैदानों में प्रवेश करने का प्रदेश ही ऋषिकेश है।

ऋषिकेश के गंगा तट पर अनेक प्राचीन देवालय हैं। ऋषिकेश के आस-पास के क्षेत्र में गंगा नदी के कगार पर स्थित ऋषि वाटिकाओं के कारण उस गाँव का नाम 'ऋषिकेश' पड़ा।

ऋषिकेश में आन्ध्र आश्रम

हिमालय पर्वत के मैदान में स्थित ऋषिकेश में आन्ध्राश्रम है जो तिरुमल तिरुपति देवस्थान के अधीन है। इस आश्रम में श्रीवेंकटेश्वर मंदिर के साथ अनेक मंदिर हैं। इधर के चन्द्रमौलीश्वर, श्रीवेंकटेश्वर स्वामी की नित्य पूजाएँ, नैवेद्य, उत्सव एवं त्यौहारों का आयोजन तिरुमल तिरुपति देवस्थान के नेतृत्व में किया जाता है। तिरुमल आलय में उत्सव, वैभव एवं पूजा-उत्सव जिस तरह मनाते हैं, उसी तरह इधर भी मनाने की व्यवस्था की गई थी।

सन् १९३० में श्रीसच्चिदानंद स्वामीजी जब दर्शन के लिए आये तब, दक्षिण प्रांत से हिमालय क्षेत्र संदर्शन के लिए आने वाले यात्रियों के लिए एक आश्रम की स्थापना करने का विचार किया। ति.ति.देवस्थान के द्वारा प्रदत्त दान तथा दूसरों के अंश दानों को भी जमा किया गया। श्री वेंकटेश्वर स्वामी, श्रीदेवी, भूदेवी मूर्तियों के प्रतिष्ठापन के साथ उत्सव मूर्तियों को भी तैयार किया गया। आन्ध्र-आश्रम को ट्रस्टी की परिषद के द्वारा प्रारंभिक चरण में आरंभ किया गया था। उसके बाद आश्रम सहित तिरुमल तिरुपति देवस्थान को सौंप दिया गया।

विशेषताएँ

शिवालिक श्रेणियों में १३ सबसे महत्वपूर्ण देवियों में एक 'सतीदेवी' के कुन्जपुरि है। पौराणिक कथा के अनुसार लोगों ने बताया था कि- भगवान शिव ने अपनी पत्नी के शरीर को कैलाश को जाते समय देखा कि देवी का ऊपर भाग इधर पड़ा हुआ था। यह देवालय उसके शरीर का भाग जहाँ पड़ा हुआ था, वहीं पर निर्मित किया गया। ऋषिकेश में रहे योग प्रशिक्षणालय भक्तों को आकर्षित करते हैं। योग प्रशिक्षणालयों में जाने के लिए आकर्षित करने का प्रधान कारण पवित्र गंगा स्नान है। भक्तों का मानना है कि ऋषिकेश में ध्यान करना मोक्षदायक है।

ऋषिकेश में १२० सालों के पहले स्थापित किया गया कैलाश आश्रम ब्रह्मविद्यापीठ है। इधर छात्रों को प्राचीन वेद विद्या में प्रशिक्षण देते हैं।

मंदिर के दर्शन के लिए-

कुन्जपुरि आलय ऋषिकेश से १५ किलोमीटर की दूरी पर एक छोटे पहाड़ पर है। इस मंदिर के पास सूर्योदय और सूर्यास्त का समय बहुत सुंदर दिखाई देता है। यह आलय शिवालिक पर्वत श्रेणियों में रहनेवाले १३ प्रसिद्ध आलयों में से एक है।

भरत मंदिर

भरत मंदिर आदिशंकराचार्यजी के द्वारा पवित्र गंगा नदी के तीर पर स्थापित किया गया था। यह विष्णुमूर्ति का आलय है। इस आलय की विष्णुमूर्ति को शालिग्राम के पत्थर के टुकडे का उपयोग करके तैयार किया गया था। इस पत्थर को हिन्दू लोग पवित्र मानते हैं और यह विष्णु को सूचित करती है। एक दूसरे से बंधे हुए नौ त्रिकोणों के साथ लगे हुए श्रीयंत्र को मंदिर के अंदर देख सकते हैं। 'बसंत पंचमी' नामक एक लोकप्रिय हिन्दू त्यौहार को लोग इस मंदिर में आकर उत्साह के साथ मनाते हैं।

लक्ष्मण आलय

लक्ष्मण मंदिर ऋषिकेश के मुख्य आकर्षणों में से एक है, जो शहर से ५ कि.मी. की दूरी पर है। लक्ष्मण मंदिर एक प्राचीन मंदिर है जो राम के भाई लक्ष्मण को समर्पित है। यह मंदिर पवित्र गंगा नदी के तट पर स्थित है। मंदिर की दीवारों पर उत्कीर्णित चित्रि हैं।

नीलकंठमहादेव आलय

नीलकंठमहादेव मंदिर ऋषिकेश के पास समुद्र तल से १३३० मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ से भव्य विष्णुकूट, ब्रह्मकूट पहाडियों को देख सकते हैं। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। श्रावण मास में और शिवरात्रि के दिन हजारों भक्त इस मंदिर का दर्शन करने आते हैं।

गीताभवन

गीताभवन एक प्राचीन मंदिर है, जो गंगा नदी के तट पर स्थित है। यहाँ दीवारों पर महाभारत और रामायण के चित्र अंकित हैं। भक्त गंगा नदी में स्नान करके गीताभवन में ध्यान कर सकते हैं और संतों के उपदेश सुन सकते हैं।

ओंकारानंद आश्रम

प्रसिद्ध हिन्दू दार्शनिक, महर्षि, लेखक ओंकारानंद सरस्वती ने सन् १९६७ में पवित्र गंगा नदी के तट पर ओंकारानंद आश्रम की स्थापना की। इस आश्रम में आध्यात्मिक कार्यक्रम, योग प्रशिक्षण एवं यज्ञ आदि का निर्वहण किया जाता है।

परमार्थ निकेतन

हिमालयों के बीच स्थित इस आश्रम में आयुर्वेदिक उपचार प्रदान किया जाता है। लोग योग, ध्यान एवं अन्य पद्धतियों को सीखने के लिए अक्सर इस आश्रम में आते रहते हैं। अंतर्राष्ट्रीय योग महोत्सवों को देखने के लिए हर साल बड़ी संख्या में पर्यटक यहाँ आते रहते हैं।

शिवानंद आश्रम

आश्रम विशुद्ध रूप से आध्यात्मिक सेवाएँ प्रदान करता है। यहाँ, आयुर्वेद-फार्मेसी, योग, वेदांत अकादमी और नेत्र अस्पताल जैसी संस्थाएँ कार्यरत हैं।

वशिष्ठ गुफा

योगी एवं संत ध्यान करने के लिए आज भी वशिष्ठ गुफा का उपयोग करते हैं। यहाँ झाडीदार बढ़ा हुआ बरगद पेड है। हिन्दुओं द्वारा पवित्र माने जाने वाले शिवलिंग गुफा भी इसके निकट ही है।

लक्ष्मण झूला

लक्ष्मण झूला साढे चार सौ (४५०) फुट लंबा पुल है जो नदी, मंदिरों और मठों की एक शानदार दृश्य प्रस्तुत करता है। ऐसा माना जाता है कि राम के छोटे भाई लक्ष्मण ने गंगा नदी को पार करने के लिए इस पुल का उपयोग किया था।

राम झूला

स्वर्ग आश्रम को शिवानंद आश्रम के साथ मिलाने पर इस राम झूला को ऋषिकेश का प्रधान आकर्षक पुल बता सकते हैं। यह लक्ष्मण झूला से बडा है।

त्रिवेणी घाट

गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों का संगम प्रदेश ही त्रिवेणी घाट है। मंदिरों में जाने से पहले भक्त इस संगम में स्नान करते हैं। संध्या के समय महा आरती के लिए भक्त इस घाट पर पहुँचते हैं।

ऋषिकुंड

ऋषिकुंड पवित्र त्रिवेणी घाट पर स्थित एक पवित्र तालाब है। भगवान राम और सीता को समर्पित रघुनाथ आलय के प्रतिबिंब को देख सकते हैं। इस पवित्र ऋषिकेश का दर्शन करने केलिए देशभर से नहीं, विदेशों से भी अनेक भक्तगण आते रहते हैं।

(गतांक से)

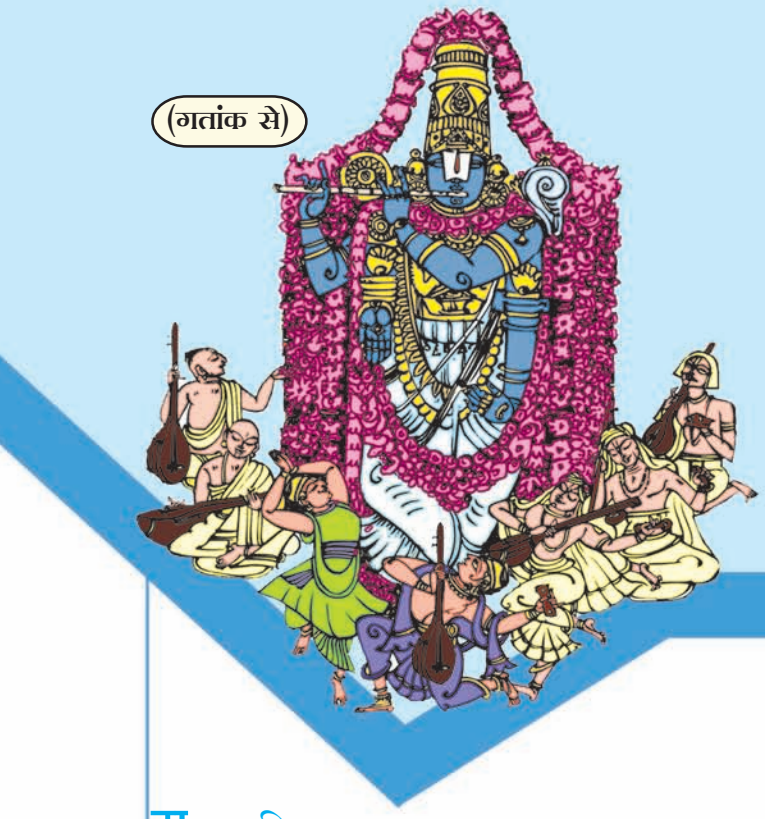

हरिदास वाङ्मय में श्रीवेंकटाचलाधीश

तेलुगु मूल - श्री एस.नागराजाचार्युलु
हिन्दी अनुवाद - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी
मोबाइल - ९४९०९२४६१८

दास्य भक्ति

''दासरेंदरे पुरंदरदासरय्या'' (दास हो तो पुरंदरदास जैसा ही हो) - पुरंदरदास के गुरु व्यासराय ने अपने शिष्य की प्रशंसा इस प्रकार की थी। गुरु से प्रशंसित होने के बावजूद पुरंदरदास अतृप्त ही रहे यह सोचकर कि मैं अभी तक हरिदास नहीं बन पाया। इस हृदयंगत वेदना को एक संकीर्तन में ऐसा प्रकट किया -

''दासनेंतागुवेनु धरे योलगेनानु'' - अर्थात्, इस पृथ्वी पर रहकर मैं हरि का दास कैसे बन पाऊँगा? इस वेदना के साथ, पुरंदरदास श्रीवेंकटाचलपति से सविनय प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि मेरे अंदर की वासनाओं को हटाकर, मुझे अपना दास बना लो हे स्वामी -

''दुर्बुद्धिगलनेल्ल बिडिसो निन्न करुण कवच
वेन्न हरणक्के तोडिसो।
चरण सेवे यनगे कोडिसो।
अभय। करपुष्पव एन्नशिरदल्लिमुडिसो।।''

हे कृपासिन्धु! मेरे अंदर की कुमति को दूर करो, तुम्हारे करुणा रूपी कवच को जीवन भर के लिए मुझे पहना दो! तुम्हारे अभय हस्त को मेरे शिर पर पुष्प की भांति सजाओ हे स्वामी! इस प्रकार के भाव को संगीतकार ने वेंकटाचलमाहात्म्यं के वृषभाचल, अंजनाचल, शेषाचल, वेंकटाचल आदि का स्मरण कर-करके गाया।

''दृढ़भक्ति निन्नल्लिबेडि। ना।
अडिगेरगुवेनय्य अनुदिनपाडि।
कडेगण्णिले केन्न नोडि। बिडुवे।
कोडुनिन्नध्यानवमनशुचिमाडि।।''

हे प्रभु! तुम्हारे प्रति मेरे मन में अटूटभक्ति रखने दो। मैं सदा तुम्हारे चरणों से सटकर रह रहा हूँ, और गा रहा हूँ। मुझमें पूर्णज्ञान पनपने के लिए मुझे मनसा-वाचा-कर्मणा तेरी ही सेवा में रहने के लिए ध्यान व ज्ञान दो स्वामी।

''मोरेहोक्कवरकाय्य बिरुदु। येन्न।
मरेयदे रक्षणेमाडय्य पोरेदु।
दुरितगलेल्लव तरिदु। सिरि।
पुरंदर विठलवेम्मनुन्ननु पोरेदु।।''

हे प्रभु! सभी तुम्हें भक्तवत्सल कहकर पुकारते हैं। इस विरुद को सार्थक बनाकर मेरा उद्धार करो। भूलो मत स्वामी! मेरी वासनाओं, मेरे अंदर के रिपुओं को दूर करके मुझे बचाओ।

''दासन माडिको येन्न स्वामी! सासिर नामद वेंकटरमण''

हे स्वामी! सैकडों नामांकित वेंकटेश्वर, मुझे अपना दास बनाओ प्रभू!

उपर्युक्त दो चरणों (पादों में) को अगर सूक्ष्मदृष्टि से देखेंगे, तो लगता है कि संकीर्तनाचार्य ने कश्यपादि ऋषियों के यज्ञ से लेकर पद्मावती के साथ वेंकटेश्वर स्वामी के पवित्र परिणय तक की गाथा इनमें गाकर सुनाया है।

श्री विजयदास ने दास्यभक्ति पर थोडा विस्तार के साथ श्रीवेंकटेश भगवान की प्रार्थना इस प्रकार प्रस्तुत की -

''दास दास दासर दास्यवकोडु। दोषराशिगलनलिदु

श्रीशधीश सुरेश सर्वेश्वर। भासुर गुणगण भव्यचरितहरे।।''

उपर्युक्त पंक्तियों में 'दास' शब्द की पुनरावृत्ति तीन बार हुई है। कवि उन दासों के प्रति अपनी दासता एवं भक्ति को प्रदान करने की प्रार्थना भगवान से कर रहा है। तीन दासों से कवि का अंतर्मन श्रीहरि, वायुदेव तथा पुरंदरदास की ओर संकेत करता हुआ लगता है। इस कीर्तन के पहले पाद - *''चित्त निन्न चिन्तेयोलिरति...''* से कवि के भाव ऐसे प्रकट होते हैं - मेरा ध्यान केवल तुम्हीं पर रहे, इतर से मेरा ध्यान हट जाये। सदा मेरा मन तुम्हारे चरणों में ही दृढ़ता के साथ लगे रहने के लिए मेरा पथप्रदर्शन करो। मेरे अंदर जंगल रूपी अरिषटवर्ग जो फैला है, उसे तुम्हारे दयारूपी खड्ग से समूल काटकर मुझे आनंद प्रदान करो हे स्वामी। मेरा मन जो भटक गया, जिसने कुमार्ग को पकडा, उसे ठीक मार्ग पर ले आओ। मुझे सज्जनों की संगति में रहने दो, वहाँ से मुझे संभालो, मेरा उद्धार करो।

इस प्रकार हरिदासों ने दास्यभक्ति प्रदान करने के लिए प्रार्थना की तथा उसकी प्राप्ति के लिए आवश्यक गुणों एवं लक्षणों का विस्तृत विवरण दूसरों के सामने भी प्रस्तुत किया। श्रीहरि के प्रति जो दास्य भक्ति प्रकट होती है, उसमें गीताचार्य के वचन - ''नहिज्ञानेन सदृशं पवित्रमिहविद्यते'', ''प्रियोहिज्ञानिनोत्यर्थं अहंस चममप्रियः'', तथा मध्वाचार्य एवं उनके अनुयायियों के ''मध्वमतवुमतवे सकल श्रुति सम्मतवु'' वचन जो ३७ मूल ग्रंथों में हैं, उन सभी का सार, उनसे प्राप्त अनुभूति, यही इनकी स्थूल बुनियाद मालूम होती है।

क्रमशः

तिरुमल यात्री इनका अवश्य ध्यान रखें

- ☑ तिरुमल-यात्रा के लिए निकलने के पूर्व अपने इष्ट अथवा कुलदेवता की प्रार्थना करें।
- ☑ भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करने के पूर्व श्रीस्वामि पुष्करिणी में स्नान करें, श्री वराहस्वामीजी की पूजा करें।
- ☑ मंदिर के अंदर भगवान पर ही ध्यान केंद्रित रखें।
- ☑ मंदिर के अंदर पूर्णतः मौन रहें तथा ''श्री वेंकटेशाय नमः'' का उच्चारण करें।
- ☑ तिरुमल के पास स्थित पापविनाशनम् तथा आकाशगंगा पवित्र तीर्थों में स्नान करें।
- ☑ तिरुमल में रहते समय हमारे रीति-रिवाजों, आचार-व्यवहारों का पालन करें।
- ☑ अपनी भेंट हुंडी में ही डालें।
- ☑ तिरुमल मंदिर के परिसरों को स्वच्छ रखें और पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रित थैलियों का ही उपयोग करें।
- ☑ श्री बालाजी के दर्शन करते समय सांप्रदायिक वस्त्रों का धारण करना चाहिए।

आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!

आयोजक - महामहोपाध्याय समुद्राल लक्ष्मणय्या,
श्री किरणभट

हिन्दी में निर्वहण - डॉ.सी.आदिलक्ष्मी
मोबाइल - ९९४९८७२१४९

पाठ - ३

घ् + घ = घ्घ
घ् + द = घ्द
घ् + ध = घ्ध
घ् + न = घ्न
घ् + म = घ्म
घ् + य = घ्य
घ् + र = घ्र
घ् + व = घ्व
ङ् + क = ङ्क
ङ् + ख = ङ्ख
ङ् + ग = ङ्ग
ङ् + घ = ङ्घ
च् + क = च्क
च् + च = च्च
च् + छ = च्छ
च् + ञ = च्ञ
च् + य = च्य
च् + र = च्र
च् + व = च्व
छ् + य = छ्य
छ् + र = छ्र
छ् + व = छ्व
ज् + ज = ज्ज
ज् + झ = ज्झ
ज् + ञ = ज्ञ
ज् + ब = ज्ब
ज् + भ = ज्भ
ज् + म = ज्म
ज् + य = ज्य
ज् + र = ज्र
ज् + व = ज्व
झ् + य = झ्य
झ् + र = झ्र
झ् + व = झ्व
ञ् + च = ञ्च
ञ् + छ = ञ्छ
ञ् + ज = ञ्ज
ञ् + झ = ञ्झ
ट् + क = ट्क
ट् + ट = ट्ट
ट् + य = ट्य
ट् + र = ट्र
ट् + व = ट्व
ट् + ष = ट्ष
ठ् + ठ = ठ्ठ
ठ् + य = ठ्य
ठ् + र = ठ्र
ठ् + व = ठ्व

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

१. नाम : .....
(अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) .....
.....
पिनकोड .....
मोबाइल नं .....

२. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड
☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

३. वार्षिक / जीवन चंदा :

४. चंदा का पुनरुद्धरण :

(अ) चंदा की संख्या :

(आ) भाषा :

५. शुल्क :

६. शुल्क का विवरण :

नकद (एम.आर.टि. नं) दिनांक :

धनादेश (कूपन नं) : दिनांक :

मांगड्राफ्ट संख्या : दिनांक :

प्रांत :

दिनांकः चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.६०.००, जीवन चंदा : रु.५००-००
- नूतन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र का उपयोग करें।
- इस कूपन को काटकर, पूरे विवरण के साथ इस पते पर भेजें–
- संस्कृत में जीवन चंदा नहीं है, वार्षिक चंदा रु.६०-०० मात्र है।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, के.टी.रोड,
तिरुपति-५१७ ५०७. (आं.प्र)

नूतन फोन नंबरों की सूचना

चंदादारों और एजेंटों को सूचित किया जाता है कि हमारे कार्यालय का दूरभाष नंबर बदल चुका है और आप नीचे दिये गये नंबरों से संपर्क करें–

कॉल सेंटर नंबर
0877 - 2233333

चंदा भरने की पूछताछ
0877 - 2277777

अर्जित सेवाओं और आवास के अग्रिम आरक्षण के लिए कृपया इस नंबर से संपर्क करें–

STD Code:
0877

दूरभाष :

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

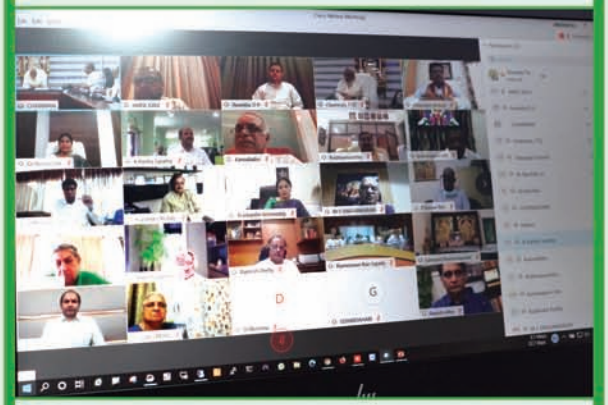

शेषाद्रि विभूति की सेवा में न्यास-मंडली के निर्णय

आन्ध्रप्रदेश मुख्यमंत्री माननीय श्री वाई.एस.जगन्मोहन रेड्डी जी के आदेशों से कोरोना वायरस के मद्धेनजर में तिरुमल तिरुपति देवस्थान के न्यास-मंडली २८ मई, २०२० को तिरुमल के अन्नमय्या भवन में न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी जी, विशेष आमंत्रित श्री भूमन करुणाकर रेड्डीजी, श्री चेविरेड्डी भास्कर रेड्डीजी, श्री मेडा मल्लिकार्जुन रेड्डी जी एवं श्री अनिल कुमार सिंघाल जी, आई.ए.एस., अन्य सदस्यों के साथ मिलकर वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से विभिन्नविषयों पर चर्चा और समाधान किया गया। उनमें से महत्वपूर्ण निम्न लिखित हैं-

तिरुमल तिरुपति देवस्थान के लिए भक्तों ने उपहार के रूप में जो संपत्ति दी, उस संपत्ति की बिक्री पर प्रतिबंध लगाने का फैसला किया। भक्तों के उपहार के माद्यम से दी गई संपत्ति के दुरुपयोग के मामले में, भले ही उपयोगी न हो, उन्हें भक्तों की भावनाओं को क्षति पहुँचाएँ बिना, इसका उपयोग कैसे करें, यह तय करने केलिए बोर्डसदस्यों, स्वामियों, भक्तों एवं बुद्धिजीवियों की एक समिति की नियुक्त करने का निर्णय लिया गया। उस कमेटी की रिपोर्ट के आधार पर क्या फैसल करना है, उस विषय के बारे में चर्चा करने की बात बतायी गयी।

राज्य अलग होने के बाद आन्ध्रप्रदेश में सरकार के छोटे बच्चों का अस्पताल न होने की वजह से नवजात शिशु पीड़ित हो रहे है, बर्ड अस्पताल में या स्विम्स अस्पताल में जहाँ भी संभव हो, बच्चों का अस्पताल तुरंत स्थापित करने का निर्णय लिया गया।

भक्त श्री वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन के लिए इंतजार कर रहे हैं। इस मामले में बोर्ड की बैठक में समीक्षा की गई। लॉक डाउन खत्म होने के बाद राज्य सरकार की अनुमति लेकर जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी भक्तों को स्वामी के दर्शन करा देंगे। कोविड-१९ के प्रकोप के कारण सामाजिक दूरी बनाए रखते हुए पर्याप्त देखबाल के साथ अधिकारियों ने भक्तों को दर्शन देने के तरीके पर कुछ प्रस्ताव तैयार किए हैं। उस पद्धति के अनुसार सरकार के निर्देशानुसार ८ जून से भक्तों को दर्शन प्रदान किए जा रहे हैं।

Edited and Published on behalf of T.T.Devasthanams by **Prof.K.Rajagopalan,** Ph.D., Chief Editor, T.T.D. and Printed at T.T.D. Press by **Sri P.Ramaraju,** M.A., Assistant Executive Officer (Press & Publications), T.T.D. Press, Tirupati-517 507.

तिरुचानूर
श्री पद्मावती देवी के
वसंतोत्सव के अंतर्गत संपन्न
स्नपन तिरुमंजन के दृश्य

श्रीनिवासमंगापुरम्
श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामीजी का
वसंतोत्सव

SAPTHAGIRI (HINDI) ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams
printing on 30-06-2020. Regd. with the Registrar of Newspapers under "RNI" No.10742, Postal Regd.No.TRP/11 - 2018-2020
Licensed to post without prepayment No.PMGK/RNP/WPP-04/2018-2020

तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामी का पुष्पयाग महोत्सव